सन् 1998 से लगातार प्रकाशित

जहाज मन्दिर

अधिष्ठाता - पूज्य आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

वर्ष : 16 • अंक : 2 • 5 मई 2019 • मूल्य : 20 रु.

श्री जीरावला पार्श्वनाथाय नमः
दादा गुरुदेव श्री जिनदत्त-कुशलसूरिभ्यो नमः
गणनायकश्री सुखसागर-जिनकान्तिसागरसूरिसद्गुरुभ्यो नमः

विश्व विख्यात श्री जीरावला महातीर्थ की पावन धरा पर नूतन श्री पार्श्वनाथ जिनालय एवं श्री जिनकुशलसूरि दादावाड़ी के

भूमि-पूजन, खनन मुहूर्त एवं शिलान्यास समारोह प्रसंगे

सकल श्रीसंघ को सादर आमंत्रण

पावन प्रेरणा एवं आज्ञाप्रदाता
पूज्य अवंति तीर्थोद्धारक खरतरगच्छाधिपति आचार्य
श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

शुभ दिन
दि. 26 मई 2019 दोपहर 11:30 बजे से

पावन निश्रा
पूज्य अवन्ति तीर्थोद्धारकश्री के शिष्य
पूज्य मुनिराज श्री मयंकप्रभसागरजी म.
मेहुलप्रभसागरजी म.

पावन सानिध्य
पूज्या महत्तरावर्या श्री चंपाश्रीजी म. की शिष्या
साध्वीवर्या विमलप्रभाश्रीजी म. की चरणाश्रिता
पूज्या साध्वी हेमरत्नाश्रीजी म.,
सा. जयरत्नाश्रीजी म., सा. नूतनप्रियाश्रीजी म.

तीर्थक्षेत्र में सत्कार्य करने से
अनेक गुणा फल प्राप्त होता है।

संपर्क:
श्री उत्तमचंद रांका,
अध्यक्ष 98410 82502
श्री कैलाश बी. संकलेचा,
संयोजक 95000 92592
श्री दीपचन्द कोठारी
98295 12187
श्री प्रकाशचन्द छाजेड़
99503 34300

निवेदक
श्री जिनकांतिसागरसूरि
स्मारक ट्रस्ट
जहाज मंदिर,
मांडवला-343042
जिला-जालोर
(राजस्थान)

नीमगुल (महाराष्ट्र) में श्री पार्श्व कुशल शांति धाम का प्रतिष्ठा महोत्सव दिनांक 3.5.2019 की झलकियाँ

न लवेज्ज पुट्ठो सावज्जं न निरत्थं न मम्मयं।
अप्पणट्ठा परट्ठा वा उभयस्संतरेण वा॥

किसी के पूछने पर भी साधु अपने लिए, अन्य के लिए या दोनों के लाभ के लिए भी सावद्य वचन न बोले, निरर्थक वचन न बोले और मर्मभेदी वचन न बोले।

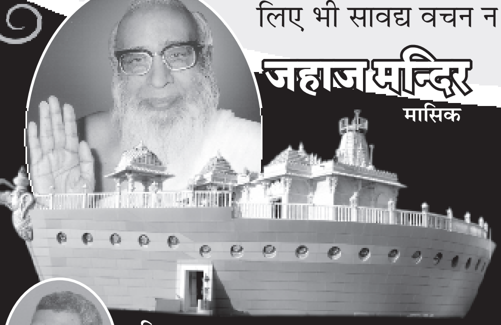

जहाज मन्दिर

मासिक

अधिष्ठाता

खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत

श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

वर्ष : 16 अंक : 2 5 मई 2019 मूल्य 20 रू.

प्रधान संपादक :

डॉ. यू.सी. जैन (महामंत्री)

जहाज मन्दिर में प्रकाशित रचनाकारों द्वारा व्यक्त विचारों से सम्पादक / प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है

सदस्यता शुल्क

संस्था संरक्षक	: 21,000 रूपये
मानद संरक्षक	: 11,000 रूपये
15 वर्षीय सदस्यता	: 2500 रूपये
12 वर्षीय सदस्यता	: 2000 रूपये
6 वर्षीय सदस्यता	: 1000 रूपये
त्रिवार्षिक सदस्यता	: 500 रूपये
वार्षिक सदस्यता	: 200 रूपये

सदस्यता, विज्ञापन व सहयोग राशि

ICICI की किसी भी शाखा में

SHRI JIN KANTI SAGAR SOORI SMARK TRUST

BANK - ICICI JALORE

ACCOUNT NO. 065301000256

IFSC CODE - ICIC0000653

सम्पर्क सूत्र / प्रकाशक

श्री जिनकांतिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट

जहाज मन्दिर

माण्डवला - 343042, जिला-जालोर (राज.)

फोन : 02973-256107, 256192, 9649640451

E-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in

www.jahajmandir.com, www.jahajmandir.org

अनुक्रमणिका

1. नवप्रभात	गच्छा. आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.	04
2. सोलह सतियाँ कथानक	मुनि मनितप्रभसागरजी म.	05
3. बारह भावना परिचय	आर्य मेहुलप्रभसागरजी म.	07
4. ऐसे थे मेरे गुरुदेव	गच्छा. आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.	10
5. कैसा हो शिक्षा का स्वरुप	मुनि मनितप्रभसागरजी म.	11
6. शिक्षाप्रद कहानी		13
7. कैसे पाएँ सकारात्मक सोच	कैलाश बी. संकलेचा	14
8. दादावाड़ी और दादा गुरुदेव	पुरातत्त्वाचार्य मुनि श्री जिनविजयजी म.	16
9. अधूरा सपना	साध्वी डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.	18
10. ओह ! संसार कितना स्वार्थी है ?	मुनि मयूखप्रभसागरजी म.	21
11. गौत्र का इतिहास	गच्छा. आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.	22
12. श्रीपूज्य/यति परम्परा और खरतरगच्छ	गच्छा. आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.	24
13. समाचार दर्शन		26
14. जटाशंकर	आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.	34

पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य

श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा

का **धूले नगर** में **चातुर्मास प्रवेश**

वि. सं. 2076 आषाढ़ सुदि 10 गुरुवार ता. 11 जुलाई 2019

को प्रातः 8 बजे

धूले संपर्क :

अध्यक्ष श्री प्रेमचंदजी नाहर

94227 87210

विज्ञापन हेतु हमारे प्रचार मंत्री कैलाश बी. संखलेचा, चैन्नई से संपर्क करावें। मो. 094447 11097

नवप्रभात

एक घटना का मैं साक्षी बना था।

नौकर के हाथों घर में रखा कांच का एक मूल्यवान् पात्र गिर गया था...। टूट कर चकनाचूर हुआ था।

उसे अपनी असावधानी पर क्षोभ था। वह रूआंसा हो चला था। उसकी आंखों में भय समा गया था।

उसने मालिक को देखा।

मालिक के चेहरे पर आक्रोश चरम सीमा पर छा गया था। उसका आक्रोशित होना स्वाभाविक लग रहा था क्योंकि नौकर के हाथों एक मूल्यवान् पदार्थ की हानि हुई थी।

मालिक का आक्रोश शब्दों के माध्यम से प्रकट हुआ। शब्द-रचना व वचन की कर्कशता से आक्रोश की तीव्रता का अहसास हो रहा था। नौकर भयभीत था।

भय और आक्रोश का वह दृश्य लम्बे समय तक चलता रहा।

मैं चिंतन में उतरा- ऐसी स्थिति में आक्रोश करना क्या उपयुक्त है?

गहराई से उत्तर मिला- व्यावहारिक दृष्टि से देखें तो आक्रोश करना गलत नहीं लगता। पर गहराई से सोचें तो पायेंगे कि ऐसा करना उपयुक्त नहीं है।

क्योंकि जो होना था, वह हो चुका। उसका आक्रोश वस्तु को उसकी पूर्व स्थिति में नहीं ला सकता। फिर यह तथ्य भी ध्यान में लेना जरूरी है कि ऐसा करने के पीछे उसका कोई निजी स्वार्थ नहीं था। यह उसकी लापरवाही का परिणाम था।

ऐसी घटना की प्रतिक्रिया तो प्रेम-भरे मधुर व्यवहार से ही होनी चाहिये।

आपका आक्रोश उसे इस घटना के बहाने खोजने की प्रेरणा करेगा। वह अपनी असावधानी को अस्वीकार कर किसी बहाने पर इसे ढोलेगा।

जबकि आपका प्रेम उसके हृदय में पश्चात्ताप पैदा करेगा। और यह पश्चात्ताप उसे भविष्य में लापरवाह न होने का संकल्प देगा।

सोलह सतियाँ कथानक
10

विलक्षण वैराग्यवती सती पद्मावती

मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.

(गतांक से आगे)

एक-दो समझदार-श्रद्धाशील श्रावकों के कानों में बात डाली गयी। वे गंभीर, शासनभक्त और आज्ञा पालक थे। उनकी समुचित देखरेख में पद्मावती ने सुन्दर पुत्र को जन्म दिया।

पद्मावती यद्यपि साध्वी थी पर वीतराग नहीं, अंगजात के प्रति आसक्ति के सूक्ष्म धागों से उसकी भावनाएँ जुड़ी हुई थी। उसके मोह ने एक झूठ बोलने के लिये भी उकसा दिया।

वह समझती थी कि प्रतिदिन पुत्र मोह में बार-बार यहाँ आना उचित नहीं होगा, गुरुमाता क्या कहेगी। परंतु इस पुत्र-मोह ने उसे माया के लिये मजबूर किया। उसने पुत्र को रत्नकम्बल में लपेटा और नगर के बाहर श्मशान के पास एकाकी छोड़कर वृक्ष की ओट में छिपकर खड़ी हो गयी।

शिशु रोने लगा और हुआ ऐसा कि उसकी रुदन ध्वनि श्मशान रक्षक के कानों में पड़ी। उस पुत्रहीन के लिये जैसे यह एक वरदान था। उसने चारों तरफ दृष्टि दौड़ाई पर कोई भी दिखा नहीं, तब उस अनाथ शिशु को अपना पुत्र मानकर गोदी में उठाया और अपने घर ले गया। इस प्रकार राजपुत्र का लालन-पालन चांडाल पुत्र के रूप में हुआ, निश्चित ही कर्म की लीलाएँ अद्भुत हैं, जिसकी कल्पना भी बुद्धि के बाहर की बात है।

पद्मावती के लिये अब पुत्र से मिलना आसान था। उसने श्मशान रक्षक की पत्नी से स्नेहिल सम्बन्ध बना लिये, जिससे वह जब-तब जाकर पुत्र को संभाल कर चली आती। पर उसने मातृत्व को प्रकट होने नहीं दिया। गुरु माता के द्वारा पुत्र प्रसव का पूछने पर 'मरा हुआ पैदा हुआ था, अतः छोड़ आयी।' कहकर समाधान कर दिया। कुछ समय बाद वह प्रवर्तिनी महोदया के साथ अन्यत्र विहार कर गयी।

लगभग दो दशक का समय अब अतीत हो चला है। पद्मावती ने कुछ दिन पहले ही सुना है कि चांडाल पुत्र कंचनपुर का राजा बन गया है और आज समाचार मिले हैं कि चंपानरेश दधिवाहन और चांडाल पुत्र के बीच एक गाँव को लेकर मतभेद हो गया है, उस कारण वे रण मैदान में आमने-सामने हो रहे हैं।

पद्मावती को लगा-अरे! चाण्डाल पुत्र की ऐसी शक्ति कि महाराज दधिवाहन से भिड़ जाये। नहीं....नहीं....यह संभव नहीं। मुझे तो लगता है, यह मेरा पुत्र है अन्यथा भुजाओं में क्षात्र बल कहाँ से आता। आखिर माता-पिता के गुण सन्तान में सक्रान्त होते ही हैं। यह महाराज दधिवाहन का औरस पुत्र होना चाहिए।

ओह! यथार्थ पर पड़ा परदा कितने अनर्थों को आमंत्रित करता है। पिता-पुत्र एक दूसरे के दुश्मन बने हैं, युद्ध करने के लिये तैयार हुए हैं, एक ही रक्त में ये कैसी विषाक्तता। मुझे निश्चय ही वहाँ जाना चाहिये। अन्यथा हजारों-लाखों बेकसूर प्राणियों के खून की नदियाँ बहेगी।

मुझे न पुत्र से मोह है, न महाराज से। यथार्थ को जीवन के धरातल पर उपस्थित कर युद्ध को आदि में ही विराम देना इस समय मेरा परम कर्त्तव्य है। फर्ज के धागे से बंधी पद्मावती गुरुमाता की आज्ञा प्राप्त कर युद्ध भूमि में पहुँची। युद्ध के शुरु होने में अल्पकाल ही बाकी था। दोनों की छावनियों में व्यूह-रचना पर मनन हो रहा था।

सबसे पहले साध्वी पद्मावती करकण्डू की छावनी में

पहुँची। आरक्षकों से साध्वी के आगमन का संदेश पाकर वह बाहर आया।

साध्वी पद्मावती ने सौम्य मुस्कान से करकण्डू की आँखों में झांका । नयनों में झिलमिलाते तेज में अपनी और महाराज दधिवाहन की संयुक्त छवि देखकर उसे पक्का विश्वास हो गया कि यह मेरा पुत्र है।

करकण्डू साध्वीश्री के प्रथम दर्शन में आकृष्ट हुए बगैर न रहा। उनके चेहरे पर छाई सौम्यता मिश्रित तेजस्विता अद्‌भुत थी। दो पल के मौन को तोड़ती हुई साध्वी पद्मावती बोली-महाराज करकण्डू। मैं आपको विशेष सूचना देने आयी हूँ।

करकण्डू की आँखों में अनायास अचरज उभर आया। उसके संकेत को पाकर सहवर्ती मंत्री, सेनापति, सुरक्षाकर्मी एक ओर खिसक गये।

पद्मावती बोली-देखो! तुम जिसे अपने माता-पिता समझकर जी रहे हो, वे तुम्हारे जन्मदाता नहीं है, उन्होंने तुम्हारा केवल लालन-पालन किया है। वास्तविक माँ-बाप तो दूसरे हैं ।

करकण्डू को आश्चर्य जरूर हुआ पर अविश्वास नहीं क्योंकि उसे हार्दिक श्रद्धा थी कि जैन साधु-साध्वी मृषावाद नहीं करते हैं। फिर उसने प्रशस्त लाठी से राजा बनने का प्रत्यक्ष चमत्कार देखा ही था।

जिज्ञासा से छलकती शब्दावली में करकण्डू ने पूछा-तो फिर मेरे वास्तविक माँ-बाप कौन हैं?

रहस्य को अनावृत्त करती हुई पद्मावती बोली-महाराज दधिवाहन, जिनके साथ तुम युद्ध करने के लिये तत्पर हुए हो, वे तुम्हारे पिता हैं।

उष्ण उसास छोड़ता हुआ करकण्डू बोला-और मेरी माँ!

मैं, साध्वी पद्मावती तुम्हारी माँ हूँ। पद्मावती एक सांस में ही कह गयी।

पहला क्षण करकण्डु के लिये अविश्वास से भरा था पर दूसरा क्षण श्रद्धा और विश्वसनीयता से परिपूर्ण था। तत्क्षण वह दो कदम आगे बढा । उसके हाथ जुड़ गये, सिर झुक गया, श्रद्धा से आँखें नम हो गयी।

माँ! माँ! मैं तुम्हें अब कहीं नहीं जाने दूंगा। तुम्हारी गोद में दुबककर जीना है मुझे।

पद्मावती बोली-करकण्डू! तेरी और मेरी दिशाएँ भिन्न-भिन्न हैं। मैं भिक्षुणी और तूं सम्राट्! तेरा रागपूर्ण जीवन, मैं वीतरागता की साधिका। तुम पिता-पुत्र में सम्बन्धों की अज्ञात स्थिति में युद्ध हो रहा है। बस! इस रक्तपात को रोकने के लिये ही मैं आयी हूँ। मेरा कार्य पूरा हुआ।

पर माँ! मैं तुम्हारे चरणों का चाकर हूँ। कोई तो सेवा का अवसर दो। यूं छोड़कर न जाओ।

करकण्डू! ममता और समता का संगम नहीं हो सकता। तुम इस रक्तपात से ऊपर उठ जाओ, यही मेरी पवित्र पूजा और सच्ची सेवा है, इसी में मान-सम्मान का गौरवगान है।

पर माँ! मैं वचन से बंधा हुआ हूँ। एक तरफ तेरा आदेश है, दूसरी ओर दत्त वचन की प्रतिबद्धता। क्या करूँ? तुम्हें अनदेखा करूं तो आज्ञा भंग का पाप लगेगा और वचन को भूला दूं तो ब्राह्मण का अपराधी हो जाऊँगा।

पद्मावती निश्चिंतता से बोली-करकण्डू! घबराने की जरूरत नहीं है। मैं अभी महाराज दधिवाहन से मिलती हूँ।

(क्रमशः)

ब्रह्मसर तीर्थ में चातुर्मास

पूज्यपाद अवन्ति तीर्थोद्धारक गच्छाधिपति आचार्यदेव श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. ने श्री ब्रह्मसर दादावाड़ी ट्रस्ट की विनंति से पूज्य ब्रह्मसर तीर्थोद्धारक उपाध्याय प्रवर श्री मनोज्ञसागरजी म.सा. आदि ठाणा-२ एवं पूज्या साध्वीवर्या श्री हेमरत्नाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा-3 का विक्रम संवत् 2076, सन् 2019 का भव्य चातुर्मास दादा गुरुदेव श्री जिनकुशलसूरिजी म. की पावन भूमि, ब्रह्मसर तीर्थ में करने की आज्ञा फरमाई।

तत्त्वज्ञान

बारह भावना परिचय

प्रस्तुति मणिगुरु चरणरज आर्य मेहुलप्रभसागरजी म.

जैन दर्शन में मोक्ष के चार मार्ग बताए गए हैं यथा- दान, शील, तप और भाव। इनमें अंतिम मार्ग भाव है। चतुर्थ मार्ग अतिशय महत्वपूर्ण है। भाव के बिना दान, शील, तप आदि अल्प फलदायक होते हैं। अर्थात् दान के साथ दान देने की सद्भावना होगी, शील के पालन की सच्ची भावना होगी एवं तप करने के सुंदर भाव होंगे तभी वे मोक्ष के हेतु बनेंगे।

भावना यानि किसी भी विषय पर मनोयोग पूर्वक विचार करना, विचारों के द्वारा जैसी भावना होती है वैसा ही फल मिलता है। शास्त्रकार भगवंतों ने भावना के संबंध में बड़ा ही गहरा एवं व्यापक विश्लेषण किया है। आचार्य श्री हरिभद्रसूरिजी महाराज ने भावना की परिभाषा देते हुए कहा है कि 'भाव्यते अनेनेति' भावना अर्थात् जिसके द्वारा मन को भावित किया जाए, संस्कारित किया जाए उसे भावना कहते है। श्री मलयगिरिजी भगवंत ने भावना को परिकर्म अर्थात् विचारों की साज-सज्जा कहा है। जैसे शरीर को तेल, इत्र आदि से बार-बार सजाया जाता है वैसे ही विचारों को विशिष्ट भावों के साथ पुनः पुनः जोड़ा जाता है। इसका कारण यह है मन की चंचलता से शरीर और वाक् संयम प्रभावित होता रहता है। मन को एकाग्र करने की बहुत सारी प्रक्रियाओं में से एक है भावना।

साधक को मोक्षमार्ग की प्राप्ति के लिए बारह भावनाओं का चिन्तन करने का निर्देश दिया गया है- 1. अनित्य भावना, 2. अशरण भावना, 3. संसार भावना, 4. एकत्व भावना, 5. अन्यत्व भावना, 6. अशुचि भावना, 7. आस्रव भावना, 8. संवर भावना, 9. निर्जरा भावना, 10. धर्म भावना, 11. लोकस्वरूप भावना 12. बोधिदुर्लभ भावना।

इन बारह भावनाओं का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है-

नंदमणिकार ऋद्धि के प्रदर्शन के साथ वीर प्रभु के दर्शनार्थ जाते हुए

१. अनित्य भावना-

जगत में जितने भी पौद्गलिक पदार्थ हैं वे सब अनित्य है। घास की नोंक पर रहे हुए ओस की बुंदों की तरह जीवन भी आयुष्य की नोंक पर टिका हुआ है। आयुष्य की पत्तियां हिलेंगी और जीवन की ओस सूख जाएगी इसलिए व्यक्ति को क्षणभर भी प्रमाद नहीं करना चाहिए। वर्षाकाल में बालक क्रीडा हेतु रेत के घर बनाता है। बरसात के बरसते ही घर ध्वस्त हो जाते है वैसे ही यह शरीर अनित्य है। ऐसा चिन्तन करना अनित्य भावना है।

२. अशरण भावना-

जैसे सिंह हिरण को पकड़ कर ले जाता है वैसे मृत्यु भी मनुष्य को ले जाती है। तब माता-पिता व भाई आदि कोई भी बचा नहीं सकते। जीव को अनाथी मुनि और सगर

राजा की तरह की तरह चिन्तन करना चाहिए कि संसार की कोई भी वस्तु शरणभूत नहीं है। एक धर्म ही शरणरूप है। जो प्राणी की अनेक दु:खों से रक्षा करता है।

३. संसार भावना-

जन्म-मरण के चक्र को संसार कहते है। जो प्राणी जन्म लेता है वह अवश्य मरता है। इस तरह चार गति के चौरासी लाख जीवयोनियों में भ्रमण करता रहता है। अरहट माला के न्याय से वायु द्वारा प्रेरित पत्ते जिसे ऊपर-नीचे होते है वैसे प्राणी सभी कीट-पतंग, निर्धन-धनी, सौभागी-दुर्भागी, भूपति- भिखारी आदि विध-विध भव करता है। परिभ्रमण के दौरान भोगे हुए कष्टों और विचित्रताओं का तटस्थता से अवलोकन कर जंबूस्वामी और वज्रकुमार की तरह मन को प्रतिबोधित करें कि इस संसार-चक्र से मुक्त कैसे होऊँ?शुद्ध मार्ग पर कैसे चलूँ?

इन्द्र महाराजा द्वारा विशिष्ट प्रदर्शनपूर्वक नंद मणिकार को सार्थक उपदेश

४. एकत्व भावना-

आत्मा की दृष्टि से हर प्राणी पूर्वभव से अकेला आया है और अकेला जाएगा। जन्म-मरण एवं रोगादि का कष्ट भी स्वयं को अकेले ही सहन करना पडता है। स्वयं के द्वारा किए कृत्यों का फल भी स्वयं को ही भोगना पड़ता है। इन सभी में माता-पिता, पुत्र-पत्नी आदि कोई शरण नहीं देता है। अशाता-वेदन का स्थायी हित करने के लिए धर्म का आश्रय लेकर मन को 'एगोहं' अर्थात् मैं अकेला हूँ, और 'नत्थि मे कोइ' मेरा कोई नहीं है। यह सुदृढ विचार कर नमि राजर्षि वत् एकत्व भावना को पुष्ट करना चाहिए।

५. अन्यत्व भावना-

यह शरीर, परिजन, बाहरी पदार्थ आदि अन्य है। मेरे नहीं हैं। सब मुझसे भिन्न है, पर है। पर वस्तु में अगर मैं अपनत्व का आक्षेपण करूंगा तो वह कष्टदायी होगा। जिस प्रकार संध्या के समय वृक्षों पर पक्षी एकत्रित हो क्रीडा करते है, वे सभी सूर्योदय होते ही दसों दिशाओं में पहुंच जाते है, उसी प्रकार परिजन भी इस भव में मिले हैं, मृत्यु होते ही यहां से अकेले जाना है। अत: मात्र आत्मा को स्व मानते हुए आत्म-गुणों को पहचानना एकत्व भावना है।

६. अशुचि भावना-

यह शरीर मांस, रुधिर आदि से पूरित अशुचिमय होने के साथ व्याधिग्रस्त एवं रोग-शोक का मूल कारण है। नाखुन, नसें, मेद, चमडी आदि स्वरूप वाले देह में शुचि कैसे संभव है?उस सुन्दर चर्म के भीतर ये दुर्गन्धपूर्ण अशुचि पदार्थों पर प्रीति कैसे हो सकती है?पुरुष के शरीर से नौ द्वार एवं स्त्री के ग्यारह द्वार से निरंतर अशुचि प्रवाहित होती है। अनेक स्वादिष्ट व्यंजन एवं मिष्ठान्न जहां विरूपित हो दुर्गन्धमय बन जाते है। इस देह को जिनेश्वर परमात्मा ने मिट्टी के भांड के समान अस्थिर कहा है। इस देह से सुकृत कर शाश्वत सुख को प्राप्त कर सकते है। इस प्रकार चिन्तन करना अशुचि भावना है।

७. आस्रव भावना-

पुण्य-पाप रूपी कर्मों के आगमन के मार्ग को आस्रव कहते है। जिसके द्वारा शुभाशुभ कर्म आत्मा के साथ बंधते है। आस्रव भाव संसार परिभ्रमण का कारण है। पांचों इन्द्रियों के विषयों में निरत रहकर जीव प्रमादी बनता है।

प्रमाद एवं कषायों का फल दुर्गतिरूप किंपाक फल के समान है। आस्रव के रहते प्राणी सद्-असद् के विवेक से शून्य रहता है। इस भावना के चिन्तन से जीव कर्मों से मुक्त होकर अक्षय ऐसे अव्याबाध सुख को प्राप्त करता है।

८. संवर भावना-

द्वार के बंद हो जाने पर जिस प्रकार किसी का प्रवेश नहीं होता वैसे ही आत्मा के परिणामों में स्थिरता होने पर अर्थात् आस्रव के निरोध होने पर आत्मा में शुभाशुभ कर्मों का आगमन नहीं होता। आत्मशुद्धि हेतु कर्मों को रोकने हेतु पांच समिति, तीन गुप्ति, पच्चक्खान, नियम, व्रत आदि द्वारा संवर को धारण करना ही संवर भावना है। क्षमादि दश यति धर्म को धारण करने वाला संवर रस का अनुभव कर जन्म-मृत्यु के भय को समाप्त कर सकते है। कर्मों के उदय में जो आगत परीषहों को जीतता है वह गजसुकुमाल मुनि की तरह दीप्तिमान बनता है।

९. निर्जरा भावना-

तप आदि द्वारा आत्मा से कर्मों को दूर करना निर्जरा है। निर्जरा के दो प्रकार बताए गए है 1. सकाम निर्जरा और 2. अकाम निर्जरा। अज्ञानपूर्वक दु:खों का सहन करना अकाम निर्जरा है जबकि ज्ञानपूर्वक तपस्यादि के द्वारा कर्मों का क्षय करना सकाम निर्जरा है। इस भावना में दुष्ट वचन, परीषह, क्रोध, मानापमान आदि समभावों से सहना, इन्द्रियों को वश में करना आदि शुद्ध कार्य करना इष्ट है। निर्जरा के लिए शास्त्रों में अनेक प्रकार के तप का वर्णन है यथा- रत्नावली, कनकावली, सिंहनिष्क्रीडित आदि विविध तप द्वारा आत्मा निर्मल भाव को धारण कर यथेष्ट स्थान प्राप्त कर सकता है।

१०. धर्म भावना-

डूबते का सहारा, अनाथों का नाथ, सच्चा मित्र एवं परभव में साथ चलने वाला यह धर्म सच्चा संबन्धी है। जो उसे धारण करता है उसके संताप दूर हो जाते है। उत्तराध्ययन सूत्र के अनुसार इस संसार में एकमात्र शरण धर्म है, इसके अतिरिक्त जीव की रक्षा कोई और नहीं कर सकता है। जरा-मरण-काम-तृष्णा आदि के प्रवाह में डूबते हुए प्राणियों के लिए धर्म द्वीप का काम करता है। इसी धर्मरूपी द्वीप का जीव शरण लेता है। उस धर्म में दृढ श्रद्धा और आचरण में धर्म को साकार करते हुए आत्मा को इहलोक एवं परलोक में सुखी बनाने का प्रयत्न करना चाहिए।

11. लोकस्वरूप भावना-

लोक अर्थात् जीवसमूह और उनके रहने का स्थान। यह लोक चौदह रज्जु प्रमाण है। इस लोक में भव-भ्रमण करते हुए जीव कर्मवश माता-पिता-पुत्र बनता है। पुन: यदा-कदा वैरवश शत्रु भी बन जाता है। साधु सुकोशल को देखकर बाघिन के भव में वैरवश पूर्व भव के पुत्र अर्थात् साधु सुकोशल का मांसभक्षण करती है। इस प्रकार इस लोक में स्वार्थ के कारण सभी स्वजन है और बिन स्वारथ सभी दूर हो जाते है। लोक के ऐसे स्वरूप का चिन्तन कर उपशम रस में निमग्न बनकर लोक के अग्रभाग पर पहुंचने की भावना करना लोकस्वरूप भावना है।

१२. बोधिदुर्लभ भावना-

इस संसार में अनेक दुर्लभ वस्तुओं में से कोई जीव उन दुर्लभ वस्तुओं को आसानी से प्राप्त कर ले, परंतु बोधि अर्थात् समयग्ज्ञान दर्शन चारित्र की प्राप्ति अत्यंत कठिन है। बोधि अर्थात रत्नत्रय जो जीव का स्वभाव है। स्वभाव की प्राप्ति दुर्लभ नहीं मानी जा सकती। परंतु जीव जब तक अपने स्वरूप को नहीं जानता है और कर्म के अधीन रहता है तब तक बोधिस्वभाव पाना दुर्लभ है और कर्मकृत सब पदार्थ सुलभ है। अनन्त काल से 84 लाख जीवयोनियों में भ्रमण करते हुए यह मनुष्य भव मिला है। अनेक बार चक्रवर्ती के समान ऋद्धि प्राप्त की है। उत्तम कुल, आर्यक्षेत्र भी पाया पर चिन्तामणि के समान सम्यक्त्व रत्न प्राप्त करना अत्यंत दुर्लभ है इस प्रकार चिन्तन करना बोधिदुर्लभ भावना है।

ऐसे थे मेरे गुरुदेव

– आचार्य जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.

पूज्यश्री आर्वी की घटनाऐं सुना रहे थे। पूज्यश्री ने फरमाया- दादावाड़ी की प्रतिष्ठा की संपन्नता के पश्चात् हमारा चातुर्मास वहीं आर्वी में संपन्न हुआ।

मैंने विनम्र भावों से पूछा- गुरुदेव! प्रतिष्ठा मई में वैशाख महिने में संपन्न हुई। चातुर्मास जुलाई में प्रारंभ हुआ। लगभग दो महिनों का अन्तराल था। क्या आपश्री दो महिने वहीं बिराजे!

पूज्यश्री ने कहा- नहीं! प्रतिष्ठा के पश्चात् विहार कर हम पुनः अमरावती गये थे। उनका बहुत ही ज्यादा आग्रह था। सार्वजनिक प्रवचनों का आयोजन रखा था। जैन समाज के समस्त घटकों के साथ अन्य समाज के लोग भी बड़ी संख्या में आते थे। वहाँ से हम नागपुर गये थे।

हाँ! नागपुर से जुड़ी एक बात मैं तुम्हें बताना चाहता हूँ। तुम्हें पता ही है न कि मेरे रोम-रोम में दादा गुरुदेव श्री जिनकुशलसूरि समाये हुए हैं। उनके प्रति अगाध श्रद्धा है। मैं हर घड़ी उनका जाप करता हूँ। हर कार्य के प्रारंभ में मेरी आंखों के सामने गुरुदेव की ही मूरत रहती है। नागपुर में जब मेरा जाना हुआ तो प्राचीन दादावाड़ी के दर्शन किये। मन प्रमुदित हो उठा।

क्योंकि यहाँ बिराजमान गुरुदेव के चरणों की अंजनशलाका चौथे दादा गुरुदेव जिनचन्द्रसूरि के करकमलों द्वारा संपन्न हुई थी। उन चरणों के चुम्बकीय आकर्षण में मेरा मन रम गया।

मेरा मन यहाँ साधना करने का हुआ। गुरुदेव का तीन दिन जाप किया। परिणाम स्वरूप जो अनूठे और अमृत भरे संकेत मुझे प्राप्त हुए, उसका वर्णन करना नामुमकिन है।

मैंने यह घटना तुम्हें इसलिये सुनाई है ताकि तुम अपनी श्रद्धा को केन्द्रित कर सको एवं उसका अचिन्त्य लाभ प्राप्त कर सको।

मैं अभिभूत हो पूज्यश्री के चेहरे को निहारने लगा। उनके चेहरे से लग रहा था वे स्वयं अतीत के उस काल-खण्ड की उन दिव्य घटिकाओं का साक्षात्कार कर रहे हैं। अनुभूत वचन प्रत्यक्ष हो उठे हैं।

मैं पूज्यश्री की अगाध श्रद्धा पर अगाधता के साथ श्रद्धा से भर उठा।

पूज्यश्री ने पुनः वर्तमान में प्रवेश कर कहा- आसपास के क्षेत्रों में विचरण कर हम वर्षावास संपन्न करने हेतु आर्वी पहुँचे।

रायपुर (छ.ग.) में सामूहिक सामायिक का विराट् आयोजन

रायपुर 17 अप्रेल। शासनपति परमात्मा महावीर के जन्मकल्याणक के उपलक्ष में रायपुर में सामायिक का विराट आयोजन किया गया। जिसमें श्रद्धालुओं ने उत्साह पूर्वक भाग लिया।

सकल जैन समाज द्वारा आयोजित इस आयोजन के व्यवस्था सहयोगी खरतरगच्छ युवा परिषद् रायपुर शाखा, मल्लि महिला मंडल, श्री वर्धमान मित्र मंडल रहे।

प्रेरक
प्रसंग

कैसा हो शिक्षा का स्वरूप

मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.

जैसे-जैसे शिक्षण का स्तर ऊँचा उठ रहा है, वैसे-वैसे मानवीय मूल्यों का ह्रास हो रहा है। लाखों का धन खर्च करने पर भी चारित्र और संवेदनशीलता का पतन शैक्षणिक संस्थान नहीं रोक पा रहे हैं।

आज की शिक्षण व्यवस्था-

शिक्षा वह, जो अनुशासित करे, गुणों से अनुप्राणित करे तथा आर्य संस्कृति को सम्मानित करें। वैसे तो शिक्षण का लक्ष्य सर्वतोमुखी विकास करना है पर मेकाले की अनार्य शिक्षण व्यवस्था मात्र मानसिक विकास तक ही सीमित है।

मन का विकास हो पर संवेदना, दया, करुणा, सहनशीलता जैसे भावप्रवण गुणों का स्तर उन्नत न हो तो शिक्षा मात्र बुद्धि के परकोटे में ही बन्द होकर रह जाती है।

आज स्कूल बेग का ही नहीं, फीस, डॉनेशन, व्यवस्थाओं का भी बोझ बढ़ा है। अलग अलग पुस्तकें टेक्स्ट-बुक, नोट बुक, वर्क बुक, पता नहीं कितना वजन लाद दिया गया है बालकों के कोमल तन-मन पर।

एक बालक लगभग 10-12 किलो जितना वजन लेकर स्कूल जाता है। यह रिपोर्ट मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने प्रस्तुत की है। हरियाणा राज्य में सबसे अधिक वजन वाले स्कूल-बैग है, उसके बाद राजस्थान, मध्यप्रदेश आदि का स्थान है।

अमाप-वजन से रिढ़ की हड्डी (Back bone) में विकार उत्पन्न हो रहे हैं और Home Work के वजन से मानसिक शान्ति का समापन हो रहा है।

शिक्षा हो प्रयोगधर्मी-

शिक्षा का उद्देश्य है- मानव का विकास। आज विद्यालय-महाविद्यालय अनुशासनहीनता, अमर्यादा, अनैतिकता, भ्रष्टाचार जैसे दुर्गुणों के पिटारे बन रहे है।

एक बालक कक्षा से गायब रहता है और उसकी खानापूर्ति अन्य बालक कर लेता है। प्राध्यापकों में भी पढाने की रुचि का अभाव है क्योंकि सब कुछ रटन विद्या पर आधारित है।

श्री कृष्ण, श्रीराम, विवेकानंद गुरुकुलों पढ़कर ही सुयश और सत्य के पैमाने बने क्योंकि वहाँ श्रम व संयम के साथ प्रायोगिक शिक्षा थी। जब तक शिक्षा में प्रयोगशीलता की प्रज्ञा का विकास नहीं होगा, तब तक बालक मात्र मानसिक रूप से ही तैयार होंगे।

इस रटन विद्या के कारण सेवा, विवेक, सहयोग जैसे तत्त्व प्रायः बालकों में दृष्टिगत नहीं होते। वे गुण भी पारिवारिक वातावरण से आते हैं, अन्यथा कॉलेज में जाते ही बालक क्यों ज्ञानशाला गमन, मातृ-पितृ वंदना आदि को भूल जाता है। होना तो यह चाहिये कि ऊपर की कक्षाओं में पहुँचने के साथ विवेक बढे और विवेक बढने के साथ किताबों का भार घटे।

आज सिखाया जाये-

卐 जब आप पर क्रोध हावी हो, तब आप क्या करेंगे?

卐 जब अपना ही कोई धोखा दे तब कैसा व्यवहार करेंगे?

卐 जब कोई रिश्वत लेना या देना चाहे, तब कैसी सोच होगी?

卐 जीवन को सार्थक और सफल बनाने की आप क्या कौशिश कर रहे हैं?

यदि शिक्षा में भाग्य व पुरुषार्थ, विज्ञान व अध्यात्म, थीयरीकल व प्रेक्टिकल, इन सभी पहलुओं का सन्तुलन हो तो विद्यार्थी को जीवन में निराश, उदास और दुःखी होना ही न पड़े।

खुल जाये नयन-युगल-

स्कूल में केवल भेज देने से माता-पिता का, अध्ययन करवा देने से अध्यापक का और सुविधा देने से संस्था का कर्त्तव्य परिपूर्ण नहीं हो जाता।

अध्यापक इतनी सुरुचि व क्रमबद्ध ढंग से पढ़ाये कि विद्यार्थी को ट्युशन की जरूरत न रहे। माँ-बाप स्कूल-टाईम को भी ध्यान में रखे एवं अध्यापक होम-टाईम को भी ख्याल में रखे, ताकि विद्यार्थी बुरी आदतों का शिकार न हो।

बालकों को इतना प्रेम न दो कि वह जूतों को पहनना न सीख पाये और इतनी सुविधा न दो कि वह कठिनाईयों को सह न पाये।

इतना अवश्य करें-

विवेकी वह है, जो उपकारी के उपकारों को याद रखे। विद्यादाता सामने हो तो बेहिचक उनके चरणों में झुक जाये, चाहे ऊँचे पद पर हो या हजार लोगों के बीच हो। मुसीबत में मुस्कान और अनुकूलता में संतुलन का विवेक जिन पुस्तकों का मूल मनोरथ हो, मानवता का विकास जिस शिक्षा का उद्देश्य हो, वह ज्ञान परम समाधि, संस्कार और साधना का आधार स्तंभ बनता है।

विद्यार्थी का पावन-प्रण हो-

- 卐 यदि में डॉक्टर बना तो दुःखी, असहाय और लाचार रोगियों का मुफ्त में ईलाज करूंगा। धन-लोभ में किसी भी प्रकार का भ्रष्टाचार नहीं करूंगा।
- 卐 यदि में वकील बना तो न्याय और नीति की रीति का अनुसरण करूंगा। रिश्वत लेकर विलासिता का जीवन जीने का बजाय सादगी की जिन्दगी पसंद करूंगा।
- 卐 यदि मैं इंजिनीयर बना तो माल-सामान में मिलावट नहीं करूंगा।
- 卐 यदि मैं अध्यापक बना तो बालकों को जीवन की सच्ची और अच्छी राह बताऊँगा। न कभी अपने कर्त्तव्य से विमुख होऊंगा, न समय और शिक्षा का दुरुपयोग करूंगा।
- 卐 यदि मैं सैनिक बना तो देश की अस्मिता के लिये प्राणों को कुर्बान करने में पीछे नहीं हटूंगा।
- 卐 यदि में ऑफिसर बना तो सत्य-मार्ग का ही अनुसरण करूंगा।
- 卐 यदि पुलिस-वर्दी का धारक बना तो अपनी विश्वसनीयता को धन के लिये नही बेचूंगा।

शिक्षा जीवन की आत्मा है, बशर्ते उसमें विवेक, विनय और विश्वास का अमृत हो।

भारतीय शिक्षा इसी शिवकर-सुन्दर और हितकर मार्ग की प्रतीक्षा कर रही है। आईये! हम सभी इस महास्वप्न की साकारता हेतु इस तरह कदम उठाये कि मंजिल प्राप्ति तक सतत लक्ष्य के प्रति प्रगतिशील रहे।

फार्म - 4 (नियम 8 देखिए)

1. प्रकाशक स्थान	-	माण्डवला, जिला जालोर (राज.)
2. प्रकाशन अवधि	-	मासिक
3. मुद्रक का नाम	-	डॉ. यू. सी. जैन
(क्या भारत का नागरिक है?)	-	हाँ
(यदि विदेशी है तो मूल देश)	-	नहीं
पता	-	जहाज मंदिर, माण्डवला, जिला-जालोर
4. प्रकाशक का नाम	-	डॉ. यू. सी. जैन
(क्या भारत का नागरिक है?)	-	हाँ
(यदि विदेशी है तो मूल देश)	-	नहीं
पता	-	जहाज मंदिर, माण्डवला, जिला-जालोर
5. सम्पादक का नाम	-	डॉ. यू. सी. जैन
(क्या भारत का नागरिक है?)	-	हाँ
(यदि विदेशी है तो मूल देश)	-	नहीं
पता	-	जहाज मंदिर, माण्डवला, जिला-जालोर
6. उनके नाम व पते जो समाचार पत्रें के स्वामी हों तथा जो समस्त पूँजी के 1% से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों।		श्री जिनकांतिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट, माण्डवला, जिला-जालौर (राज.)

मैं डॉ. यू. सी. जैन, जहाज मंदिर, माण्डवला, जिला-जालोर (राज.) द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य हैं।

डॉ. यू. सी. जैन

दिनांक : 5.5.2019

प्रकाशक के हस्ताक्षर

कहानी

शिक्षाप्रद कहानी

प्रस्तुति : पी. मुकेश प्रजापत

आप बहुत सारी मेहनत कर रहे हैं, बहुत सारा काम कर रहे हैं। लेकिन रिजल्ट नहीं मिल रहा हैं। आप सोच रहे होंगे कि मामला कहाँ अटक रहा हैं।

एक छोटी सी कहानी से समझते है-

एक बार एक बिल्डर के अंडर में एक कारीगर काम करता था और कारीगर की उम्र ज्यादा हो गयी थी। वह बिल्डर के पास जाकर बोला कि बॉस अब मुझे रिटायरमेंट लेना हैं। अब मैं काम नहीं कर पाउंगा, आप मुझे फ्री कर दो, मैं घर जाकर बच्चों के साथ टाइम बिताना चाहता हूँ, बहुत काम कर लिया।

बिल्डर ने कहा कि चले तो तुम जाओ लेकिन एक प्रोजेक्ट अटक रहा हैं, एक और मकान बना के चले जाओ। बस उसके बाद तुम जैसा चाहोगे वैसा रिटायरमेंट मिलेगा।

अब कारीगर ने सोचा कि बॉस जाते हुए भी एक और मकान बनवा रहा हैं। मतलब बॉस तो बॉस होता हैं।

कारीगर ने कहा- ठीक है मैं करता हूँ। कारीगर मकान बनाने लगा।

बेमन से उसने 3-4 महीने में मकान बनाकर तैयार कर दिया। उसे लगता था कि क्यों जाते हुए भी एक और काम करूँ। 3-4 महीने बाद वह फिर पहुँचा बॉस के पास और बोला- सर वो मकान जो आपने बनाने के लिए कहा था वो मकान मैंने बना दिया आप चलकर एक बार देख लो कैसा, क्या हैं।

बिल्डर और कारीगर दोनों पहुँचे। जहाँ मकान बना था उससे थोड़ा सा दूर जाकर खड़े हो गए। बिल्डर ने वो मकान देखा और वो देखता हैं कि आड़ा-टेढ़ा,

अजीब सा मकान बनाया है इस कारीगर ने अब तक जितने मकान बनाये शानदार बनाये, सभी लोग तारीफ करते थे।

बिल्डर ने उस कारीगर को चाबी दे दी और कहा कि ये मकान मैं तुम्हारे ही लिए बनवा रहा था।

अब कारीगर को समझ नहीं आया कि ये क्या हो गया। अगर उसे मालूम होता कि वो मकान खुद के लिए बना रहा है तो शानदार मकान बनाता।

उसने आज तक इतने सारे शानदार मकान बनाए, लेकिन उसे मालूम नहीं था इसलिए उसने बेमन से आड़ा-टेढ़ा, अजीब सा जल्दी से मकान बना के खत्म कर दिया। कहानी यहीं खत्म होती हैं!

लेकिन अपनी जिन्दगी में भी यही हो रहा हैं।

आप रोजाना एक ईंट उसके ऊपर दूसरी ईंट, अपना मकान बना रहे हैं। अपना फ्यूचर बना रहे हैं। लेकिन आप भूले जा रहे हैं कि वो आप ही का फ्यूचर हैं।

आखिर में आपसे यही कहना चाहता हूँ कि
कर दिखाइये कुछ ऐसा
कि दुनियाँ करना चाहे आपके जैसा।।

सही दिशा

कैसे पाएँ सकारात्मक सोच

प्रस्तुति– कैलाश बी. संकलेचा

हम सबने अपनी सोच की शक्ति के बारे में सुना है, और ये हमारी सोच ही है, जो हमारी सफल होने की संभावना को निर्धारित करती है। हम जानते हैं कि सकारात्मक सोच जीवन के कई क्षेत्रों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। जबकि नकारात्मक सोच स्वयं ही हमारे जीवन को तबाह कर देती है। आमतौर पर सकारात्मक सोच हमें हमेशा खुश रखती है और सफलता की ओर ले जाती है। जबकि नकारात्मक सोच हमें दुःखी, उदास, तनावपूर्ण और जीवन से छुटकारा पाने के विचार की ओर ले जाती है। इसलिए अच्छी और रचनात्मक सोच सफलता और उपलब्धियों के लिए बहुत जरूरी है।

हम कैसे ऐसी आदतें विकसित करें, जो हमारी सोच को सकारात्मक बनाने में मदद करे?सबसे पहले आइये जानते हैं कि सोच क्या है?

मनोविज्ञान में सोच या नजरिया या रवैया किसी व्यक्ति, वस्तु या घटना के पक्ष या विपक्ष में भावना की अभिव्यक्ति है। दूसरे शब्दों में सोच किसी व्यक्ति या वस्तु के बारे में सोचने या विचार करने का एक स्थाई तरीका है।

सकारात्मक सोच

जब भी खिड़की से बाहर देखें तो कीचड़ को नहीं, आसमान के तारों को देखें, यही है सकारात्मक सोच। सकारात्मक सोच आदमी का वह ब्रह्मास्त्र है, जो उसके मार्ग के सभी व्यवधानों व बाधाओं को समाप्त कर उसकी सफलता का मार्ग प्रशस्त कर देता है। याद रखें– एक नकारात्मक विचार हमारे अनेक सकारात्मक विचारों को समाप्त कर देता है, उनका दमन कर देता है। निराशा मनुष्य को शिथिल कर देती है, तोड़कर रख देती है; वहीं एक छोटी सी सफलता का सकारात्मक विचार मन में उमंग एवं उत्साह का संचार कर देता है।

आज की आपाधापी भरी जिंदगी में सभी लोग तरह-तरह की स्पर्धाओं और चुनौतियों से जूझ रहे हैं। ऐसे में महत्त्वपूर्ण आवश्यकता सकारात्मक दृष्टिकोण तथा सोच के साथ आगे बढ़ने की है। सकारात्मक सोच व्यक्ति की जीवनशैली और फिर दृष्टिकोण को बदल देती है; इससे व्यक्ति की सफलता के सारे द्वार खुल जाते हैं।

कैसे पाएं सकारात्मक सोच :-

आइये कुछ ऐसी आदतों के बारे में बताते हैं, जो अपनी सोच को सकारात्मक बनाने में मदद कर सकती है।

1. अहसानों की एक डायरी बनाएं

कोई एक बुरी घटना एक क्षण में आपका पूरा दिन खराब कर सकती है या किसी के साथ कोई झगड़ा या बहस हमारी खुशियों को उस दिन कम कर देता है। जब भी आपको लगे कि आपके मन में नकारात्मक भावनाएं आपको परेशान कर रही हैं तो इन्हें नियंत्रित करने के लिए एक डायरी में उस दिन की 5 ऐसी बातों या घटनाओं को लिख डालिये जब आपने कृतज्ञता या अहसानमंद होने की भावना महसूस की और आप देखेंगे कि कैसे आपका नज़रिया बदल जाता है। ये देखा गया है कि प्रशंसा से आप खुश होते हैं और चिंता, नकारात्मकता और तनाव की भावनाएं आपके पास नहीं आने पाती।

2. अपनी चुनौतियों का सामना नए तरीके से करें

हमें अपनी पुरानी सोच कि ये काम बहुत कठिन है यह नहीं हो सकता। इन बातों के स्थान पर 'यह हो जायेगा', 'ये मैं कर सकता हूँ' जैसी भावना लाएं। हो सकता है ऐसी बहुत सी चीजें हों जिन पर हमारा पूरा नियंत्रण ना हो लेकिन यदि हम अपना पूरा सामर्थ्य और मन को उस काम को करने में लगाते हैं तो हमें बाद में कोई पछतावा नहीं रहता। चुनौतियों का सामना साहस के साथ करो ना कि विकास के अनुभव में रुकावट की तरह।

3. रिजेक्ट होने पर भी अच्छा महसूस करें

रिजेक्शन एक कला है, जिससे हमें अपनी असफलताओं को समझने और कमियों को सुधारने का मौका मिलता है। क्योंकि जीवन में कोई भी बिना रिजेक्शन के आगे नहीं बढ़ता है। इसलिए रिजेक्ट होने पर परेशान ना हों और बुरा होने की आशा कभी मत करें। यदि बुरा होने का इंतजार करेंगे तो बुरा होने की संभावना होती है। इसलिए हमेशा ये सोच रखिये कि 'मैं स्वयं की कमियों का सुधार करूंगा', 'सब ठीक है' और मेरे पास अगला मौका है।

4. अपने जीवन का वर्णन सकारात्मक शब्दों से करें

हमारी सोच से ज्यादा प्रभावी हमारे शब्द होते हैं। आप वो हैं जो आप अपने बारे में सोचते हैं। आप अपने जीवन के बारे में जो बोलते हैं वैसा ही आपका जीवन होता है। जो भी आप बोलते हैं आपका दिमाग वही सुनता है। इसलिए हमेशा अपने लिए अच्छे, सरल और सुंदर शब्दों का प्रयोग करें। आप देखेंगे आपका जीवन एक अलग तरह के प्रकाश से चमक उठेगा। आपने अपने जीवन के लिए जो मार्ग चुना है उसमे आपको अधिक आनंद मिलेगा। हमेशा अपने शब्दों में सकरात्मक रहें। उदाहरण के लिए जब भी संभव हो अपने आप से कहें- 'मैं सम्पूर्ण हूँ', 'मैं खुश हूँ' और 'मैं सकारात्मक हूँ'।

5. नेगेटिव या प्रश्नवाचक शब्दों को सकारात्मक शब्दों से बदलिये

हम अक्सर नकारात्मक या प्रश्नवाचक शब्दों का प्रयोग करते हैं। जैसे- मुझे यह काम करना है, पानी का गिलास आधा खाली है, आदि-आदि।

इसके बदले में सकारात्मक शब्दों का प्रयोग करें। जैसे- मुझे यह कार्य करने का अवसर मिला, पानी का ग्लास आधा भरा हुआ है। आपका रवैया आपके कामों को पूरा करने, उसमें प्रशंसा पाने में तेजी से बदलाव लाता है और हम वैसा पाते हैं जैसा हम चाहते हैं।

एक अध्ययन यह दिखाता है कि नकारात्मक मन और भावनाएं आपके जरूरतों की पूर्ति, आपके आदर्श और आपकी सकारात्मक भावनाओं में कमी लाती हैं।

6. सकारात्मकता लाने में सांसों का इस्तेमाल करें

हमारी साँस विशेष रूप से हमारी भावनाओं से जुड़ी हुई है। क्या आपने गौर किया है कि जब हम किसी चीज पर ध्यान केंद्रित करते हैं तो अपनी सांसों को रोक कर रखते हैं?और क्या अपने महसूस किया है कि जब हम क्रोध करते हैं तो हमारी साँस बदल जाती है। हमारी साँस हमारी भावनाओं के अनुसार बदल जाती है। इसी प्रकार अपनी सांसों का इस्तेमाल करके अपनी सोच का तरीका भी बदल सकते हैं। जब भी आप फ्री हों- दस बार लम्बी और गहरी साँस लीजिये। आपको अच्छा लगेगा।

7. बुरे समय (आपदा) में भी सच्ची बातों पर ध्यान दीजिये

जब मीडिया में चारों तरफ नफरत और क्रूरता फैली हो तब विश्वास और सकारात्मक बातें सोचना बहुत कठिन होता है। आपदा, युद्ध और दर्दनाक अनुभव की घटनाओं में झूठी संवेदना और अपनापन दिखाने वाली खबरों की बजाय हमें सच्ची खबरों को देखना सीखना होगा।

8. किसी समस्या के साथ उसका समाधान भी खोजिए

सकारात्मक रहने का मतलब ये नहीं कि आप समस्याओं के प्रति जागरूक ही ना हों। रचनात्मक व्यक्ति के पास किसी भी समस्या को सुलझाने का हल होता है। जब आप अपने आस-पास की किसी समस्या को उठायें तो उसके समाधान के प्रस्ताव पर भी आपका प्रयास होना चाहिए। समस्या आने पर उससे परेशान होने की बजाय ये समस्या किस प्रकार हल हो सकती है, इसका प्रयास कीजिये। इस तरह सकारात्मक सोच, हमारी सफलता-असफलता का कारण होती है। सकारात्मक बनने के लिए अग्रिम शुभकामनाएँ।

लेखन शैली को कैसे विकसित करें

लेखन शैली तभी विकसित होगी जब आप कुछ ना कुछ लिखेंगे। इसके लिए आप जो भी अखबार अथवा पुस्तक प्रतिदिन पढ़ते हैं उसमें पसंदीदा लेख को अच्छे से पढ़ा करिये और उनके नोट्स बनाने शुरू कर दीजिए। और धीरे-धीरे लिखते-लिखते आप की लिखने की कला विकसित होती चली जाएगी।

इससे आपको कई फायदे होंगे। जैसे- आपकी लिखने की स्पीड बढ़ेगी। जिससे की आपको परीक्षा में ज्यादा प्रश्न छूटने की परेशानियों का सामना भी नहीं करना पड़ेगा। आपकी हैंड राइटिंग भी सुधरेगी और आपके निबंध के पेपर पर काफी अच्छी कमांड भी बन जाएगी।

खरतर सहस्राब्दी गौरव वर्ष आलेख

दादावाड़ी और दादा गुरुदेव

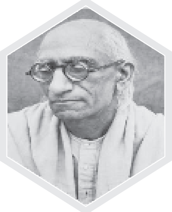

—पुरातत्त्वाचार्य मुनि श्री जिनविजयजी म.

खरतरगच्छ के मुख्य युगप्रधान आचार्य श्री जिनदत्तसूरि तथा उनके उत्तराधिकारी आचार्यवर्य मणिधारी श्री जिनचन्द्रसूरि आदि के स्मारक रूप में, भारत भर में अनेक स्थानों पर गुरु-पूजास्थान बने हुए हैं?यह एक विशेष ज्ञातव्य वस्तु है कि खरतरगच्छ के इन पूर्वाचार्यों के स्मारक स्वरूप ये 'दादावाड़ी' नाम से जितने गुरु-पूजास्थान बने हुए हैं उतने अन्य किसी गच्छ के पूर्वाचार्यों के स्मारक रूप में ऐसे खास स्मारक स्थान बने जाते नहीं होते।

इन पूर्वाचार्यों में मुख्य स्थान श्री जिनदत्तसूरि का है। श्री जिनदत्तसूरि का स्वर्गगमन राजस्थान के प्राचीन एवं प्रधान नगर अजमेर में वि.सं. 1211 में हुआ। जहाँ पर उनके शरीर का अग्निसंस्कार हुआ, वहाँ पर भक्त जनों ने सर्वप्रथम उस स्थान पर स्मारक स्वरूप देवकुल बनाया और उसमें स्वर्गीय आचार्यवर्य के चरणचिन्ह स्थापित किये।

श्री जिनदत्तसूरि एक महान् प्रभावशाली आचार्य थे। ज्ञान और क्रिया के साथ ही उनमें अद्‌भुत संगठन-शक्ति और निर्माण-शक्ति थी। उन्होंने अपने प्रखर पांडित्य एवं ओजपूर्ण संयम के प्रभाव से हजारों की संख्या में नये जैनधर्मानुयायी श्रावक कुलों का विशाल संघ निर्माण किया। राजस्थान में आज जो लाखों ओसवाल जातीय जैन जन हैं उनके पूर्वजों का अधिकांश भाग, इन्हीं श्री जिनदत्तसूरि द्वारा प्रतिबोधित और सुसंगठित हुआ था। बाद में उत्तरोत्तर, इन आचार्य के जो शिष्य-प्रशिष्य होते गये वे भी महान् गुरु का आदर्श सन्मुख रखते हुए इस संघ-निर्माण का कार्य सुन्दर रूप से चलाते तथा बढ़ाते रहे।

श्री जिनदत्तसूरि के ये सब शिष्य-प्रशिष्य धर्म प्रचार और संघ निर्माण के उद्देश्य से भारतवर्ष के जिन-जिन स्थानों में पहुंचे, वहां पर देव स्थानों के साथ-साथ ही वे युगप्रवर्तक प्रवर गुरु के स्मारक रूप में छोटे-मोटे गुरु पूजास्थान भी बनाते रहे। और उनमें सूरिजी के चरण चिन्ह अथवा मूर्ति रूप स्थापित करते रहे। ये स्थान आज सब 'दादावाड़ी' के नाम से प्रसिद्धि प्राप्त कर रहे हैं।

खरतरगच्छ से सम्बन्ध रखने वाली गुरु परम्पराओं की पट्टावलियों में भी उनके उल्लेख मिलते हैं कि किन आचार्य अथवा उनके आज्ञानुवर्ती यतिजनों ने कहां और कब दादावाड़ी नाम से प्रसिद्ध होने वाले स्तूपों, देवकुलों आदि की स्थापना करवाई।

श्री जिनदत्तसूरि, महान् विद्वान और चारित्रशील होने के उपरान्त एक विशिष्ट चमत्कारी महात्मा भी माने जाते हैं। अत: उनके नामस्मरण तथा चरणपूजन द्वारा भक्तों की मनोकामनाएं भी सफल होती रही हैं-ऐसी श्रद्धा पूर्वकाल से इनके अनुयायी भक्तजनों में प्रचलित रही है। अत: इस कारण से भी इनकी पूजा निमित्त इन देवकुलों, छत्रियों, स्तूपों आदि का निर्माण होता रहा है।

श्री जिनदत्तसूरिजी के बाद उनकी पट्ट परम्परा में होने वाले मणिधारी श्री जिनचन्द्रसूरिजी, श्री जिनकुशलसूरिजी तथा अकबर प्रतिबोधक श्री जिनचन्द्रसूरिजी के विषय में भी चमत्कारी होने की बड़ी श्रद्धा भक्तजनों में प्रचलित है। इसलिये प्राय: इन चारों आचार्यों की भी सम्मिलित चरण

पादुकाएं आदि प्रतिष्ठित और पूजित होती रही हैं। अनेक स्थानों में चरण चिन्हों के सिवा मूर्तिरूप भी प्रतिष्ठित मिलते हैं।

दादा शब्द एक प्रकार से देशी भाषा का रूढ़ शब्द है। संस्कृत या प्राकृत में इस शब्द का प्रयोग नहीं मिलता। योंतो इसका सामान्य अर्थ वृद्ध या पूज्य पुरुष होता है। राजस्थान में खासकर दादा, पिता के पिता इस अर्थ में व्यवहृत होता है। दादा पड़दादा अर्थात् पितामह-प्रपितामह यह इसका सार्वत्रिक अर्थबोध है। मालवा, गुजरात और सौराष्ट्र में भी प्राय: इसी अर्थ में इसका विशेष प्रयोग होता है। पर कहीं-कहीं बड़े भाई को भी लोग 'दादा' कहकर पुकारते हैं। बंगाल में मुख्य करके इसी अर्थ में इसका प्रयोग होता है। महाराष्ट्र में भी प्राय: इसी अर्थ का बोधक है।

सम्भव है राजस्थान की देशप्रसिद्धि के अनुरूप श्री जिनदत्तसूरिजी के शिष्य-प्रशिष्यों ने महान् गुरु को 'दादा' के पूज्य एवं आत्मीय भाव की एकताबोधक शब्द से सम्बोधित करना शुरु किया हो, और फिर उसी शब्द का सार्वत्रिक प्रचार होता रहा हो।

पुस्तकों में जो कुछ शिलालेख आदि दिये गये हैं उनसे यह ऐतिहासिक तथ्य ज्ञात होगा कि वि.सं. 1211 से लेकर वि.सं. 2010 तक के 800 वर्ष जितने दीर्घकाल में, कितने स्थानों में कितने जनों ने, कितने और कैसे गुरुस्मारक स्वरूप ये पूजनीय स्थान बनाये हैं?इन शिलालेखों में सैकड़ों ही यतिजनों और श्रावक श्रविकाओं के तथा उनके कुलों के नाम अंकित हैं।

यहां पर प्रसंगवश हम यह भी एक निर्देश करना चाहते हैं कि जिन महान् दादागुरु श्री जिनदत्तसूरि के स्मारक-स्वरूप दादावाड़ी नामक स्थानों का वर्णन प्राप्त होता है उन्हीं श्री जिनदत्तसूरिजी का एक भव्य स्मारक स्थान, राजस्थान के राष्ट्रतीर्थ चित्तौड़गढ़ में बनवाने का प्रयत्न किया जा रहा है। चित्तौड़गढ़ वास्तव में श्री जिनदत्तसूरि का प्रभावक स्थान है। चित्तौड़ ही में इनको सूरिपद प्राप्त हुआ और चित्तौड़ ही से इनके प्रभावपूर्ण जीवनक्रम का शुभारम्भ हुआ।

इसलिये चित्तौड़ यह श्री जिनदत्तसूरि के भक्तजनों के लिए कल्याणक भूमि जैसा सर्वश्रेष्ठ तीर्थस्थान है। इसी तीर्थ में श्री हरिभद्रसूरि स्मारक के अन्तर्गत श्री जिनदत्तसूरि का एक भव्य देवकुल बनाने की योजना हो रही है और उसमें श्री जिनदत्तसूरि एवं उनके परम गुरु अभयदेवसूरि एवं श्री जिनवल्लभसूरि आदि की उपासना योग्य सुन्दर मूर्तियां प्रतिष्ठित करने का शुभ मनोरथ है।

(दादावाड़ी दिग्दर्शन की प्रस्तावना से आंशिक संशोधन सहित साभार आलेख।)

पूज्य गच्छाधिपतिश्री की विहार-सूचना

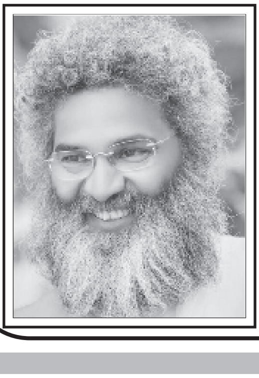

पूज्य गच्छाधिपति अवन्ति तीर्थोद्धारक आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. सा. पूज्य बालमुनि श्री मलयप्रभसागरजी म., नवदीक्षित पूज्य मुनि श्री मयूखप्रभसागरजी म. ठाणा 3 शहादा, सारंगखेड़ा होते हुए निमगुल पधारे। ता. 3 मई 2019 को श्री पार्श्व कुशल शांति धाम की प्रतिष्ठा संपन्न करवाकर घोटाणे होते हुए पूज्य श्री नंदुरबार पधारेंगे, जहाँ उनकी निश्रा में ता. 10 मई को मुमुक्षु विजयकुमार कोचर की भागवती दीक्षा संपन्न होगी।

संपर्क- मुकेश प्रजापत - 9825 1058 23, 7987 1514 21

धारावाहिक
कथा
7

अधूरा सपना

प्रमोद गुरु चरणरज साध्वी विद्युत्प्रभाश्री जी म.

(गतांक से आगे)

युवरानीक मलावतीप ूलोंक ीम खमलीश य्या पर लगभग एक घंटे से आने वाली प्रत्येक आहट पर चौंक उठती थी। आज उसके जीवन की स्वप्निल रात्रि थी। आज की रात के लिये उसने कितने-कितने सपने देखे थे। उसकी सहेलियाँ जब उसे तैयार कर रही थी तो उन सबने मिलकर भी उसे कितना परेशान किया था। यद्यपि वह नाराज होने का नाटक जरूर कर रही थी पर भीतर से वह आनन्दित ही हो रही थी।

सब सहेलियाँ यही तो कह रही थी- तुम्हारे सपनों का राजा युवराज फूलों की तरह सुगंध से परिपूर्ण नाजुक दिल का मालिक है। उसकी संवेदनाओं को कभी ठेस मत पहुँचाना।

उसने अपने स्वामी को प्रसन्न करने के लिये मानसिक रूप से कितनी तैयारी की थी! पूरा राज्य कह रहा था कि मैं रूप और गुणों में किसी भी पुरुष के मन को जीतने में सक्षम हूँ। मुझे पत्नी के रूप में प्राप्त करके कोई भी राजकुमार अपने भाग्य की सराहना किये बिना नहीं रहेगा। फिर क्या कारण है कि रात्रि का एक प्रहर बीत गया और अभी तक स्वामी के दर्शन नहींह ुए?क्याम ुझसेज यादाउ नकीरु चि कसीअ न्य स्थान पर है?

कमलावती की सहेलियाँ काफी देर तक हंसी-ठिठोली करती रही पर जब रात्रि का दूसरा प्रहर प्रारंभ हुआ तो इंतजार चिंता में बदल गया।

राजकुमार क्या दोस्तों में इतने व्यस्त और मस्त हो गये कि उन्हें अभी तक अपने कक्ष में आने की सुध नहीं हुई?क्या वे इतने संकोची है कि दोस्तों को अभी तक विदा नहीं कर पाये?अथवा उनके दोस्त इतने उद्दंड है कि वे यह निर्णय ही नहीं कर पाये कि युवराज को इस समय कहाँ होना चाहिए?

सखी पुष्पावती ने देखा- युवरानी की सदाबहार हंसती आंखें कुछ उदास हो गयी है।

उसने अत्यंत प्रेम से कहा- देवी! युवराज की आहट पाते ही हम आपको जगा देंगे। बैठे-बैठे आप थक गयी हैं। कुछ देर विश्राम कर लें।

युवरानी इंतजार की पीड़ा में भी मुस्कुरा पड़ी। उसने मन ही मन कहा- इन्हें क्या पता कि प्रियतम के इंतजार में दर्द भी दर्द नहीं लगता बल्कि उसमें भी मीठास का ही अनुभव होता है। फिर सोचा- उसे तो प्रियतम के मिलन का इंतजार है अत: उसे जागने में आनंद आ सकता है पर मेरी सखियों को तो बैठे-बैठे अब कष्ट का अनुभव हो रहा होगा। पर मैं भी क्या करूँ?स्वामी के आगमन से पूर्व कितना भी कहूँ, ये जा नहीं सकती। तो मैं क्या करूँ?स्वामी ने ये क्या किया?क्या अभी तक उनके दोस्तों ने उन्हें मुक्त नहीं किया?

युवराज ने हमारे लिये यह कितनी विचित्र स्थिति पैदा कर दी है। मन पीड़ित हो रहा है, यह इतना महत्त्वपूर्ण नहीं है जितना यह कि इन सखी-सहेलियों के बीच हमारी स्थिति कितनी हास्यास्पद हो रही है।

नहीं... नहीं... हमारे स्वामी इतने बेदरकार नहीं हो सकते। पता नहीं क्यों हमने इतने नकारात्मक विचार किये?हम अच्छे विचार भी तो कर सकते थे। वे इतने विशाल राज्य के होने वाले भाग्यनिर्माता है। संभव है- किसी राजकीय विचारधारा के तहत उन्हें विलंब हो गया होगा। कोई अनिवार्य कार्य आ गया होगा।

तुरंत अधीर मन ने प्रतिकार करते हुए कहा- यह सब तो ठीक है पर अब तो रात्रि का दूसरा प्रहर भी व्यतीत होने

की तैयारी में है। मेरी सहेलियों ने मुझे कितना उमंगों से सजाया है। अब तो बीतते हर पल के साथ मेरे सजावटी सौन्दर्य के साथ-साथ मेरे भीतर की उमंगों का सौन्दर्य भी फीका होता जा रहा है।

उसने देखा- उसकी सहेलियाँ उदास होने के साथ-साथ बैठे-बैठे अब उंघने भी लग गयी है। उसने सोचा- प्रियतम उसके है। मिलन की उत्सुकता उसमें है। इन सहेलियों का क्या अपराध है कि वे भी उसके साथ-साथ रतजगा करे। उसकी बुद्धिमत्ता उसी में है कि वह इन्हें सोने के लिये मजबूर करे।

इधर युवरानी युवराज की प्रतीक्षा में पलक-पांवडे बिछाये इंतजार कर रही थी, उधर युवराज अपनी ही दुनियां में मगन थे।

राजनर्तकी ने जब युवराज के संबंध की सूचना सुनी तो उसके पॉवों की धरती ही खिसक गयी थी। कहां तो वह ये सपनें देखने लगी थी कि वह आजीवन युवराज के हृदय की मालकिन बनी रहेगी। वह यह तो जानती थी महलों की महारानी तो वह किसी भी सूरत में बन नहीं सकती पर इतनी जल्दी युवराज पराये हो जायेंगे, यह तो उसकी कल्पना से परे था।

वह कितना भी प्रयास करेगी पर अधिकृत अनधिकृत में अंतर तो रहेगा ही। वह चाहकर भी पत्नी के पद की तुलना में तो पिछड़ ही जायेगी। नहीं... नहीं...। वह यों हताश होकर हाथ पर हाथ रखे भाग्य का इंतजार नहीं करेगी। वह अपने पुरुषार्थ से स्थितियों को नियंत्रित करने काभ ाागीरथप रिश्रमक रेगी।स ोचते-सोचतेउ सकेह ोठों पर कुटिल मुस्कान छा गयी।

रात्रि को प्रतिदिन की तरह जब युवराज ने राजनर्तकीक ेख ांडम ेंक दमर खात ेख ांडक ीस जावट देखकर वह दंग रह गया।

उसने पूछा भी- क्या बात है देवी! आज कक्ष का यह शृंगार... क्या कोई विशिष्ट अतिथि आ रहा है।

तिरछी निगाहों से राजकुमार को देखकर उसने कहा- आपसे बढकर इस दासी के लिये और कौन विशिष्ट हो सकता है?हां, यह दीगर है कि यह नाचीज आपके लिये बहुत तुच्छ है। यह तो इस दासी का सौभाग्य है कि आपने इस धूल को भी आज तक अपने माथे का चंदनब नाकररख ा।अ न्यथाअ ापज ैसेभ ाग्यविधाताक े सामने हमारी औकात ही क्या है? पर लगता है अब हमारा भाग्य हमें दगा देनेवाला है। कहते-कहते उसका गला रूंध गया और आँखों से बोर-बोर आंसू टपक पड़े।

राजकुमार ने जब अपनी प्रियतमा की आंखों से बहती आँसुओं की धारा देखी तो उसका हृदय जैसे फट पडा उसने आँसुओं को अपनी अंगुलियों से पौंछते हुए कहा- क्या मेरे प्यार में कहीं खता हो गयी है? क्या मेरे प्रेम को तुमने उतना कमजोर समझा है? आज तुमने ऐसा कहकर मेरे कलेजे पर एक साथ कितने तीर छोड़ दिये हैं। तुमने मेरे प्रेम पर अविश्वास क्यों किया?

राजनर्तकी राजकुमार की बातें सुनकर और अधिक जोर-जोर से रोने लगी।

राजकुमार को तीरों और तलवारों से खेलने का शौक तो था पर भावनाओं के समंदर से बचाव करना वह नहीं जानता था। वह क्षत्रिय था। बहादुरी उसकी नस-नस में बहती थी पर नारी के आँसुओं के अस्त्र से बच पाने की कला उसने किसी पंडित से नहीं सीखी थी। वह इन बहते आंसुओं को कैसे रोके?

उसने अत्यंत नजाकत से उसके गालों पर बह आये आंसुओं को पौंछते हुए कहा- देवी! तुम अपने आंसुओं को रोको अन्यथा हम इन आंसुओं में बह जायेंगे राजनर्त्तकी ने अपने आंसू पोंछ लिये।

युवराज का आग्रह देखकर उसने कहा- हम आपके बढते सौभाग्य से अत्यंत गौरवान्वित है। हमने जब राजकुमारी के साथ आपके संबंध की सूचना सुनी तो सबसे ज्यादा खुशी हमें हुई। परंतु हम यह भी तो जानते हैं कि आपकी जुदाई झेलना हमारे वश की बात नहीं है। हम आपकी स्थिति भी समझते है कि आपको अपने राजधर्म की मर्यादा का पालन भी करना है। इन स्थितियों में आप ही बताइये कि हमारा क्या भविष्य है।

(क्रमशः)

राजनर्त्तकीक ीब ातेंस ुनकरर ाजकुमारह ो...ह ो... करके हंस पडा। उसके हास्य से खंड की दीवारें भी कांप उठी।

राजनर्त्तकी तो उसे यों हंसते हुए देखकर सहम गयी।

युवराज की जब हंसी थमी तो उसने कहा- क्या हुआ?तुम डर गयी?कितनी भोली हो तुम!

हमने तो सोचा कि तुम्हारे रोने में कोई बड़ी दुर्घटना छिपी हुई होगी। यह तो वही कहावत लागू हो रही है कि 'खोदा पहाड़ - निकली चुहिया'। हम आज तुमसे बड़े-बड़े वादे तो नहीं करते पर तुम्हें इतना विश्वास दिलाते है कि हमारे लिये पहली प्राथमिकता तुम्हारी रहेगी। तुम्हारी अनुमति लिये बिना हमारे जीवन का कोई कदम नहीं उठेगा।

राजनर्त्तकी ने कहा- हम जानते है कि वादा करना आसान है पर समय की धारा में वह कब बह जाता है- पता भी नहीं चलता। खैर...। हम आज कितनी भी चिन्ता क्यों न करे, आखिर जो भाग्य को मंजूर होगा, वही होगा।

युवराज का क्षात्रतेज जाग उठा। उसने कहा- तुम हमारी बातों को मजाक न समझो। हम जो कह रहे हैं, वह अंतिम सांस तक निभायेंगे।

युवराज की बात सुनते ही राजनर्तकी के चेहरे पर हास्य छलक उठा। उसने अपनी चाल को और पैना करते हुए कहा- तो क्या सचमुच शादी की रात भी आप हमारी कुटिया को पावन करेंगे?

युवराज ने तैश में आकर कहा- जरूर... जरूर। हम उस रात भी आपसे मिलने आयेंगे।

राजनर्तकी युवराज की बातें सुनकर भावविभोर हो उठी। उसने युवराज के गले में बाहों का हार पहनाते हुए कहा- आप कितने अच्छे हैं। अपने प्यार पर कुर्बान होना तो कोई आपसे सीखे।

युवराज उसी वादापूर्ति के लिये राजनर्तकी के कक्ष में पहुंच गये थे। यद्यपि दोस्तों ने उन्हें समझाया था कि आज वहाँ जाना कतई उचित नहीं है। जिस संबंध की आज तक किसी को भी भनक नहीं है, आज इस कदम से पूरे राज्य में यह बात फैल जायेगी। पर राजकुमार के हृदय में तो राजनर्तकी का नशा इस कदर छाया हुआ था कि कोई भी बात उसे समझ में नहीं आयी और वह गुप्त रास्ते से राजनर्तकी के कक्ष में पहुंच गया।

(क्रमशः...)

(शेष पृष्ठ 21 का)

ओह! संसार कितना स्वार्थी है?

अपने भाई के लिये पक्वान्न बनाये। भोजन के लिये ऊँचे पाट पर बिठाया। चांदी की थाली में भोजन परोसा गया।

बहिन भोजन कराने के लिये सामने बैठी। उसने कहा- भैया! भोजन करो।

रमेश ने अपने गले से हार निकाला... अंगुठियाँ निकाली... कडा निकाला! एक थाली में उन सबको रखकर उसे मोतीचूर का लड्डू अर्पण करते हुए बोला- ले अंगूठी... लड्डू खा! मोतीपाक खा! मैसूरपाक खा!

बहिन यह देखकर चकरा गई, वह चकित होकर बोली- भैया! ये क्या कर रहे हो?खाना आपको खाना है। कहीं अंगूठी भोजन करती है क्या?

रमेश मुस्कुराकर बोला- बहिन! तुमने जिसे भाई माना, उसे ही भोजन करा रहा हूँ। मैं भाई होता तो जब कुछ महिनों पहले आया था, तब मेरा भाई के रूप में परिचय होता। आज तुम स्वागत मेरा नहीं कर रही हो, अपितु इन आभूषणों का कर रही हो... धन संपत्ति का कर रही हो...! सुनकर बहिन रो पडी। क्षमायाचना करने लगी।

संसार की यही दशा है। यहाँ संबंधों का मूल्य नहीं है। यहाँ केवल और केवल धन, सत्ता, संपत्ति का मूल्य है। ऐसे असार संसार को शीघ्र समझ कर अपनी आत्मा का कल्याण करने के लिये चारित्र मार्ग की सही दिशा ग्रहण करें, यही इस कथा का सारांश है।

कहानी

ओह! संसार कितना स्वार्थी है?

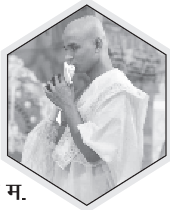

मणिगुरु चरण रज मुनि मयूखप्रभसागरजी म.

राजनगर में रमेश अपनी पत्नी के साथ रहता था। सामान्य स्थिति थी। बहुत ज्यादा संपन्नता भी नहीं थी तो बहुत ज्यादा गरीबी भी नहीं थी।

उसकी बहिन सुशीला का विवाह एक संपन्न घराने में हुआ था। वह वहाँ अपना जीवन आनंद के साथ व्यतीत कर रही थी।

रमेश के जीवन में पापकर्म का उदय हुआ। उसकी पत्नी को केंसर जैसी घातक बीमारी हो गई। इलाज कराना जरूरी था, पर उसके पास अर्थ व्यवस्था नहीं थी। एक बार की जांच में ही 5 से 10 हजार रूपये की राशि पूरी हो जाती। पूरा इलाज कराने में कम से कम आठ से दस लाख रूपये का भारी भरकम खर्चा था।

वह तनाव में आया। इलाज कराना भी जरूरी था। पास में पैसा नहीं था। क्या करें, इस चिंता में अचानक उसके दिमाग में बहिन सुशीला की छवि उपस्थित हुई।

उसने सोचा- मेरी बहिन के पास अथाह पैसा है। दस लाख उससे उधार लेकर इलाज करा देता हूँ। फिर धीरे-धीरे कमाकर वापस कर दूंगा।

दूसरे ही दिन वह एक थैली हाथ में लेकर रवाना हुआ।त ीन-चारि दनोंक ीप ैदलय ात्राक रब हिनक े गाँव पहुँचा। वह काफी समय बाद आया था। अतः पूछते-पूछते बहिन के घर जा पहुँचा।

चूंकि वह पैदल यात्रा कर आ रहा था। खाना-पीना बराबर नहीं हुआ था। चेहरा उतरा हुआ... बाल बेतरतीब ढंग से बढे हुए...!

उसकी बहिन अपनी संपन्न सहेलियों के साथ वार्ता कर रही थी।

सहेलियों की नजर मजदूर जैसे लगने वाले रमेश पर पड़ी। वे एक साथ बोल उठी- अरी सखी! देख तो कौन आया है!

फटेहाल भाई को देखते ही उसने पहचान लिया। उसने पल भर में सोचा- मेरा भाई आया है। सारे लोगों को रिश्तेदारों को... मेरी सहेलियों को पता चलेगा कि मेरा भाई ऐसा फटेहाल है तो मेरी तो सारी इज्जत ही मिट्टी में मिल जायेगी। उसने तत्काल जवाब दिया- अरे! यह तो मेरे पीयर में मेरे घर पर काम करने वाला रसोईया है।

रमेश ने जब यह वाक्य सुना तो उसकी आशाओं पर तुषारापात हो गया। वह समझ गया कि मेरी अमीर बहिन को अपने गरीब भाई का, भाई के रूप में परिचय देने में शर्म-संकोच का अनुभव हो रहा है।

वह वहीं से उल्टे पाँव लौट गया। वह समझ गया था कि यहाँ पैसों की कीमत है। पैसा हो तो पराया भी अपना है। और पैसे न हो तो अपना भी पराया है।

उसने तय किया कि मैं परमात्मा का नाम लेकर कुछ काम करूँगा... मेहनत करूँगा... मुझे जरूर सफलता मिलेगी।

और ऐसा ही हुआ। उसने दूसरे शहर में जाकर काम किया। भाग्य ने साथ दिया। पुण्य का उदय हुआ। और कुछ ही महिनों में करोड़पति हो गया।

वह अपार पैसा लेकर अपने गाँव की ओर लौटने लगा ताकि अपनी पत्नी का इलाज करा सके। लौटते हुए बीच में बहिन का गाँव आया। वह ठाटबाट के साथ बहिन के घर पहुँचा। बहिन ने जब सोने से लदे हुए अपने भाई को देखा तो खुशियोंक ेम ारेउ छलप डी।व हप ूरेग ाँवम ेंघ ूम-घूमकर सबको कहने लगी- मेरा भाई आया है। मेरा भाई आया है। भाई के गले में वजनदार सोने की चैन और हार था। दसों ही अंगुलियों में हीरे वाली अंगुठियाँ थी।

(शेष पृष्ठ 20 पर)

गोत्र का इतिहास
15

डोसी/दोसी/दोशी/सोनीगरा गोत्र का इतिहास

आचार्य जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.

ठाकुर हीरसेन को अपना वादा याद आया। पर सवा लाख स्वर्णमुद्राओं के लोभ के कारण उसने क्षेत्रपाल की पूजा कर अर्पण नहीं की। यह दोषी है। क्षेत्रपाल कुपित डोसी गोत्र के इतिहास का संबंध मणिधारी दादा श्री जिनचन्द्रसूरि की जन्मभूमि विक्रमपुर से है। उस समय यह क्षेत्र जैसलमेर में शामिल होने से भाटीपा क्षेत्र कहलाता था।

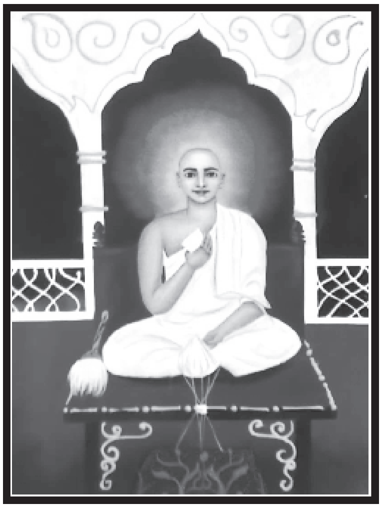

वहाँ क्षत्रिय ठाकुर हीरसेन सोनीगरा का राज्य था। उसके एक पुत्र का दिमाग कर्मवश विक्षिप्त था। योगानुयोग विहार करते हुए महान् शासन शिरोमणि सिद्ध सूरिमंत्र के स्वामी, प्रथम दादा गुरुदेव श्री जिनदत्तसूरीश्वरजी महाराज अपने विशाल शिष्य मंडल के साथ वि. सं. 1197 में विक्रमपुर में पधारे।

चूंकि गुरुदेव का विहार विक्रमपुर में पूर्व में हो चुका था। यही वह क्षेत्र था, जहाँ गुरुदेव ने महामारी के उपद्रवक ेाश ाांति कयाथ ाा!य हीव हन गरथ ाा,ज हाँ महावीरस्वामी जिनालय की भव्य प्रतिष्ठा उनकी पावन निश्रा में संपन्न हुई थी। यही वह क्षेत्र था, जहाँ उन्होंने एक ही दिन 1200 बारह सौ दीक्षाऐं एक साथ प्रदान करके जिनशासन में एक अनूठे इतिहास की रचना की थी।

वहाँ के प्राय: सारे लोग गुरुदेव से पूर्ण परिचित थे। गुरुदेव के आगमन का संवाद ज्योंहि ठाकुर हीरसेन सोनीगरा ने सुना तो वह प्रसन्न हो उठा। उसके हृदय में भाव उठा कि गुरुदेव वचन सिद्ध महात्मा है। वह शीघ्र अपने विक्षिप्त पुत्र को लेकर गुरुदेव के श्रीचरणों में पहुँचा और कृपा बरसाने की विनंती करने लगा।

गुरुदेव ने पुत्र की ओर नजर की, त्योंहि पुत्र उन्मत्त होकर बोलने लगा- गुरुदेव! इस बालक के पिताजी दोषी है। उन्होंने गलती की है। यह उसी का परिणाम है। इन्होंने अपनी प्रतिज्ञा का उल्लंघन किया है।

फिरव हप ुत्री जसकेश ारीरम ें व्यंतर ने प्रवेश किया था, वह सारी कथा सुनाने लगा।

ठाकुर हीरसेन के कोई पुत्र नहीं था। उसने क्षेत्रपाल की आराधना की। मन्नत मांगी और प्रार्थना की- हे क्षेत्रपाल देव! पुत्र होने पर सवा लाख स्वर्णमुद्रा आपको अर्पण करूँगा। उसकी मन्नत सार्थक हुई। पुत्र हुआ। खेतल नाम रखा।हो उठा। इस कारण यह पुत्र विक्षिप्त है।

गुरुदेव ने सूरिमंत्रादि महाप्रभावशाली विशिष्ट मंत्रों से अभिमंत्रित कर विशिष्ट मुद्राओं के साथ वासचूर्ण उस विक्षिप्त खेतल पर संकल्पबल सहित डाला और तत्काल चमत्कार उपस्थित हुआ। उस ठाकुर-पुत्र खेतल के शरीर में विद्यमान क्षेत्रपाल देव ने कहा- गुरुदेव! मैं आपको वंदना करता हूँ। आपकी आज्ञा शिरोधार्य करता हूँ। यह कहकर क्षेत्रपाल ने वहाँ से प्रस्थान किया। पुत्र अब पूर्ण स्वस्थ हो गया। यह प्रत्यक्ष चमत्कार देखकर लोग अभिभूत हो उठे। गुरुदेव के चरणों में पुन: पुन: वंदना करने लगे।

गुरुदेव ने ठाकुर को प्रतिबोध देते हुए कहा- तुम सत्य धर्म को स्वीकार करो। यह जीवन इन्द्रियों के भोगों में गंवाने के लिये नहीं मिला है। तुम्हें वीतराग परमात्मा के सत्य धर्म को स्वीकार करना चाहिये। गुरुदेव के उपदेश से सभी जन प्रभावित हो उठे। चमत्कार तो प्रत्यक्ष अभी-अभी देखा ही था।

वे सभी नतमस्तक हो गुरुदेव से अपनी शरण में लेने की प्रार्थना करने लगे। सभी जन परमात्मा के व गुरुदेव के

अनुयायी होने के लिये तत्पर हो उठे।

गुरुदेव ने शासन-प्रवेश-दीक्षा मंत्र प्रदान कर सभी पर वासचूर्ण डाला।

चूंकि ठाकुर ने दोष लगाया था, इस आधार पर दोषी गोत्र प्रदान किया। वे सभी ओसवाल जाति में सम्मिलित होकर अपने आपको परम धन्य समझने लगे।

दोषी ही अपभ्रंश में डोशी या डोसी कहलाते हैं। अन्य राजपूत भाई जो श्रावक बने वे सोनीगरा होने के कारण सोनीगरा कहलाने लगे।

ठाकुर के प्रधानमंत्री पमार क्षत्रिय सोहनसिंहजी थे। उनके पुत्र पीथलजी ने दादा गुरुदेव श्री जिनदत्तसूरि से श्रावकत्व ग्रहण किया। वे भी सच्चे जैन बने। उनका परिवार पीथलिया कहलाया।

इसी दोसी परिवार में विक्रम की सोलहवीं शताब्दी में चित्तौड़गढ़ में कर्माशा डोसी हुए, जिन्होंने श्री सिद्धाचल महातीर्थ का सोलहवांत ीर्थोद्धारक राया। उनके वंशज आज भी चित्तौड़ व उदयपुर में रहते हैं। उदयपुर का सुप्रसिद्ध पद्मनाभ स्वामी के मंदिर का निर्माण भी इसी डोसी परिवार व नवलखा परिवार ने करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा खरतरगच्छ के पूज्य हीरसागरजी गणि के करकमलों द्वारा संपन्न हुई थी। उदयपुर का वासुपूज्य भगवान का मंदिर जो कांच के मंदिर के नाम से सुप्रसिद्ध है, उसका निर्माण भी इसी डोसी परिवार द्वारा करवाया गया।

यह फोटो वासुपूज्य मंदिर कांच का मन्दिर उदयपुर का है जो दोशी परिवार द्वारा निर्मित है।

चित्तोड़गढ़ किले पर सातवीस देहरी मंदिर के पीछे पार्श्वनाथ व सुपार्श्वनाथ भगवान के मन्दिर का निर्माण भी इसी डोसी परिवार द्वारा करवाया गया है।

मुंबई में हुआ 'अस्तित्व का आनंद'

श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ मुंबई के तत्वावधान में पू. पार्श्वमणि तीर्थप्रेरिका गच्छगणिनी श्री सुलोचनाश्रीजी म. की शिष्या पू. साध्वी प्रियरंजनाश्रीजी म. की निश्रा में अस्तित्व का आनंद कार्यक्रम संपन्न हुआ। गिरनार चातुर्मास हेतु सुदीर्घ विहाररत साध्वीजी ने आग्रह भरी विनंती को स्वीकार कर साप्ताहिक स्थिरता की अनुमति प्रदान की। नित्य प्रवचन का क्रम तो चला ही किन्तु रविवार को अस्तित्व का आनंद नामक एक विशिष्ट कार्यक्रम भी आयोजित किया गया। कार्यक्रम का सफल संचालन सुप्रसिद्ध प्रवक्ता हितेषभाई ने किया तथ गौरव राठोड ने श्रोतावर्ग को सुमधुर संगीत लहरियों से मंत्रमुग्ध किया।

आत्मा के विराट अस्तित्व को उजागर करनेवाली यह विशिष्ट प्रस्तुति थी। सम्पूर्ण कार्यक्रम का केंद्र बिंदु था - जड़ शरीर से प्रत्याभूत निज आत्मस्वरूप का अवलोकन करना एवं अपनी बाह्य पहचान को भूलकर अपनी अभ्यन्तर संपत्ति का आनंद लेना। आत्मरमणता में सहायभूत माता पिता गुरु परमात्मा आदि प्रधान-गौण सभी तत्त्वों के अस्तित्व का आनंद लेना।

कार्यक्रम के अंतराल में साध्वी श्री प्रियरंजनाश्रीजी म. ने कई मार्मिक दृष्टांतों को प्रस्तुत कर उपस्थित श्रोतागण को भावविभोर कर दिया। 300 से अधिक श्रोताओं ने अनिमेष नयनों से सम्पूर्ण कार्यक्रम को निहारा। कार्यक्रम के पश्चात् आयाजित साधर्मिक वात्सल्य का लाभ मणिरंजन ग्रुप ने लिया। संघ द्वारा लाभार्थी का बहुमान किया गया।

कार्यक्रम के अंत में सचिव सोहनराज सेठिया ने आगंतुक मेहमानों का अभिनन्दन एवं आभार व्यक्त किया।

इस अवसर पर संस्थापक अध्यक्ष प्रकाशजी कानूगो, अध्यक्ष अमृतलालजी कटारिया संघवी, भूतपूर्व अध्यक्ष मांगीलालजी श्रीश्रीश्रीमाल, भंवरलालजी कानूगो, शांतिलालजी मरडिया, प्रदीपजी श्रीश्रीश्रीमाल, चम्पालालजी वाघेला आदि कई गणमान्य महानुभावों की उपस्थिति सविशेष रही।

- धनपत कानुगो, मुंबई

श्रीपूज्य/यति परम्परा और खरतरगच्छ

आचार्य जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.

पिछले दिनों बीकानेर में खरतरगच्छ सहस्राब्दी समारोह मनाया गया। उसमें 'खरतर' बिरुद-धारक, 'खरतर' नामकरण के पश्चात् गच्छ के आद्य आचार्य श्री जिनेश्वरसूरि के लिये 'यति' शब्द का प्रयोग किया गया। साथ ही दादा गुरुदेव व पूरी पट्ट परम्परा को 'श्रीपूज्य' शब्द से संबोधित किया गया। यह स्वाभाविक रूप से औचित्य से परे था।

यति शब्द साधु का पर्यायवाची शब्द है। पर वर्तमान में यति शब्द एक ऐसे व्यक्तित्व के लिये रूढ़ हो गया है जो वेश से साधु है, पर आचरण साधु-धर्म से प्राय: विपरीत है। इसी प्रकार परम आदर व बहुमान के लिये प्रयुक्त किये जाने वाले श्रीपूज्य शब्द ने भी अपना मूल अर्थ खो दिया है।

यह शब्द वर्तमान में उस गादीपति के लिये रूढ़ हो गया है, जो यतियों का नेतृत्व करता है। वेश भले उनका साधु का हो, भले वे अपने आपको जैनाचार्य लिखते हों, पर उनके आचरण में जैनागम-निर्दिष्ट श्रमणत्व के पंच महाव्रतों का पालन कहीं दृष्टिगोचर नहीं होता।

क्या गच्छ के आदिपुरुष पूर्वाचार्य श्री जिनेश्वरसूरि, जिनदत्तसूरि आदि उस अर्थ में श्रीपूज्य थे, जिस अर्थ में श्रीपूज्य शब्द वर्तमान में प्रचलित है?

ऐसा सपने में भी नहीं सोचा जा सकता। जिन्होंने शुद्ध श्रमणाचार के पालन व उसकी प्रतिष्ठा के लिये तत्कालीन मठाधीश श्रीपूज्यों को शास्त्रार्थ में परास्त कर आचार की प्रखरता के लिये विजय प्राप्त कर 'खरतर' बिरुद प्राप्त किया था, उन्हें आज की भाषा में यति अथवा श्रीपूज्य कहना उनके उत्कृष्ट संयम का घोर अपमान करना है।

परमात्मा महावीर की श्रमण परम्परा तो पूर्ण त्यागी पंच महाव्रतधारी साधुओं की ही है। जब-जब उस परम्परा में शिथिलाचार आया तो समय-समय पर क्रियोद्धार होते रहे। क्रियोद्धार का अर्थ होता है- शिथिलाचार का सर्वथा त्याग कर शुद्ध साधु बनना! क्रियोद्धारक कभी भी किसी नई परम्परा का सूत्रपात नहीं करते। बल्कि वे मूल परम्परा में आये दोषों का परिमार्जन कर उसे पूर्ण सुविशुद्ध बनाने का भगीरथ पुरुषार्थ करते हैं। यही पुरुषार्थ आचार्य जिनेश्वरसूरि ने किया था। फलस्वरूप उस चन्द्रगच्छ की प्राचीन परम्परा को खरतर का विशेषण प्राप्त हुआ। जो आगे जाकर गच्छ के नाम के साथ जुड़ गया।

ऐसा ही क्रियोद्धार चतुर्थ दादा गुरुदेव श्री जिनचन्द्रसूरि ने किया था। उनके द्वारा जो क्रान्तिकारी कदम उठाये गये, परिणामस्वरूप सारे शिथिल यतियों को गृहस्थ बना दिया। उनका संकल्प था कि या तो शुद्ध पंच महाव्रतधारी साधु रहेगा या गृहस्थ! शिथिल आचार वाला यति कोई नहीं रहेगा। उनके बाद महोपाध्याय क्षमाकल्याणजी म. एवं गणनायक श्री सुखसागरजी म. ने भी क्रियोद्धार कर शुद्धता का वातावरण निर्मित किया।

परमात्मा महावीर के मूल सिद्धान्तों के अनुरूप श्रमण परम्परा का आचार सुनिश्चित करने के लिये बारहवीं शताब्दी के आचार्य श्री जिनवल्लभसूरि ने संघ पट्टक, दादा गुरुदेव जिनदत्तसूरि ने संदेह दोलावली, जिनपतिसूरि, चतुर्थ दादा

जिनचन्द्रसूरि, महोपाधयाय समयसुन्दरजी, महोपाध्याय क्षमाकल्याणजी, आचार्य जिनहरिसागरसूरि आदि महान् आचार्यों द्वारा ग्रन्थों, पट्टकों, नियमावलियों आदि के माध्यम से आदेश-पत्र जारी किये ताकि श्रमण जीवन में शिथिलाचार का प्रवेश न हो।

ऐसी महान् परम्परा को यति अथवा श्रीपूज्य लिखने का क्या निहितार्थ हो सकता है?

गुर्वावलि, व्यवस्था पत्र, प्रबन्ध आदि ग्रंथों में आचार्य भगवंतों के नाम के पूर्व वंदनीय-पूजनीय-आदरणीय अर्थ में 'श्रीपूज्य' उपाधि का प्रयोग किया गया है। जैसे वर्तमान में साधु के आगे 'पूज्य मुनि' लिखा जाता है। उसी शब्द को शिथिलाचारी यतियों ने उपाधि-पदवी मानते हुए रूढ़ मान लिया, जो कि सर्वथा सत्य के विपरीत है।

अगर 'श्रीपूज्य' पद शास्त्रीय होता तो प्राचीन ग्रंथों में इसका उल्लेख होता। शास्त्रों में आचार्य, उपाध्याय, गणी, गणधर, प्रवर्तक आदि पदों की व्याख्या है। पर श्रीपूज्य पद का कोई उल्लेख नहीं है। यदि जिनेश्वरसूरि आदि आचार्य भगवंत श्रीपूज्य होते तो श्रीपूज्य पदारोहण का संवत, माह, तिथि भी प्राप्त होती (दीक्षा तिथि, आचार्य पदारोहण तिथि की तरह)। जो वस्तुतः प्राप्त नहीं होती। गुर्वावली, पट्टावली, गणधर सार्ध शतक आदि ऐतिहासिक ग्रन्थों में कहीं पर भी श्रीपूज्य पदारोहण का वर्णन प्राप्त नहीं होता।

ऐसी स्थिति में केवल स्वयं की शास्त्र-विरुद्ध आचरणा व मान्यता का पोषण करने के लिये परम शुद्ध उत्कृष्ट चारित्र का पालने करने वाले पूवाचार्य भगवंतों को श्रीपूज्य पदधारी बताना, सर्वथा सत्य के विपरीत है।

खरतरगच्छ का तो जन्म ही उन साधुओं/यतियों/श्रीपूज्यों/मठाधीशों के विरोध में हुआ है, जो जैन साधु का चोला पहन कर आगम-विरुद्ध आचरण करते थे। जो अपने आपको साधु कहते थे, पर पंच महाव्रतों व अष्ट प्रवचनमाता की साधना से पूर्णतया च्युत थे। ऐसी महान् शासन-परम्परा में शिथिल प्रवृत्तियों को प्रोत्साहित कैसे किया जा सकता है?गच्छ के श्रावक संघों द्वारा कैसे ऐसी शिथिल परम्पराओं को प्रश्रय दिया जा सकता है?

हमें परमात्मा महावीर की शास्त्र-विहित शुद्ध अवधारणाओं को दृढ़ता से धरण कर आत्म-कल्याण के प्रशस्त पथ पर अग्रसर होना चाहिये।

पूज्य आचार्यश्री द्वारा चातुर्मास घोषित

पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. ने श्रीसंघों की विनंती स्वीकार नये चातुर्मास इस प्रकार घोषित किये हैं-

पू. मुनिश्री महेन्द्रसागरजी म. आदि	रायपुर दादावाडी
पू. साध्वी श्री जिनशिशुप्रज्ञाश्रीजी म.	दुर्ग एवं नागपुर
पू. साध्वी श्री गुणरंजनाश्रीजी म.	नीमच
पू. साध्वी श्री अमीपूर्णाश्रीजी म.	कालापीपल गांव (जि. शाजापुर म.प्र.)
पू. साध्वी श्री लयस्मिताश्रीजी म.	दल्लीराजहरा
पू. साध्वी श्री दर्शनप्रभाश्रीजी म.	सूरत (शीतलवाडी)

अवन्ति तीर्थोद्धारकश्री का बड़वाह नगर में भव्य स्वागत

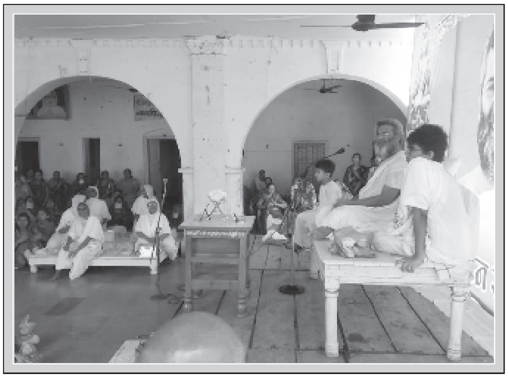

बड़वाह 14 अप्रेल। पूज्य गुरुदेव अवन्ति तीर्थोद्धारक खरतरगच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. सा., पूज्य मुनि श्री मलयप्रभसागरजी म., पूज्य मुनि श्री मयूखप्रभसागरजी म. एवं पू. माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म., पू. बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म., पू. साध्वी श्री हर्षप्रज्ञाश्रीजी म. आदि ठाणा इन्दौर से विहार कर बड़वाह श्रीसंघ एवं श्री विमलनाथ सेवा समिति के निवेदन को स्वीकार कर दिनांक 14 अप्रेल 2019 को बड़वाह पधारे। अवन्ति तीर्थोद्धारकश्री के प्रवेश के उपलक्ष में भव्य शोभायात्रा का आयोजन किया गया।

श्री संभवनाथ जिनमंदिर से शोभायात्रा का प्रारंभ हुआ जो नगर के मुख्य मार्गों से होती हुई श्री विमलनाथ जिनमंदिर पहुंची जहां पूज्यश्री का मंगल प्रवचन हुआ। एवं कामली ओढाकर गुरुभक्ति की गई। सभा का संचालन नवरतनमलजी जैन व आभार संजयजी सांड ने माना।

वि.सं. 1985 में सेठ श्री केशरीमलजी बाफना परिवार द्वारा इस मंदिर दादावाडी व धर्मशाला का निर्माण करवाया गया था।

पूज्यश्री यहां पर दो दिन बिराजे। यहां जिनमंदिर दादावाड़ी धर्मशाला की व्यवस्था के संदर्भ में पूज्यश्री ने मार्गदर्शन प्रदान किया। पूज्यश्री ने बड़वाह के श्रावकों की भक्ति की अनुमोदना की।

पाटण में उपाश्रय निर्माण प्रगति पर

खरतरगच्छ के उद्‌भव स्थल पाटण नगर में पूज्य गुरुदेव अवन्ति तीर्थोद्धारक गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की पावन प्रेरणा से श्री जिनदत्त-कुशलसूरि खरतरगच्छ पेढ़ी द्वारा भूखण्ड क्रय कर उपाश्रय का निर्माण तीव्र गति से चल रहा है। पेढ़ी के कोषाध्यक्ष श्री दीपचंदजी बाफना व उपाध्यक्ष श्री बाबुलालजी लूणिया इस कार्य को देख रहे हैं।

पूज्य साधु-साध्वीजी भगवंतों के अध्ययन के लक्ष्य से इस उपाश्रय का निर्माण हो रहा है।

केयुप द्वारा जन्मकल्याणक मनाया

बीकानेर 17 अप्रेल। शासनपति परमात्मा श्री महावीरस्वामी जन्मकल्याणक के उपलक्ष में बीकानेर में सुन्दर आयोजन किए गए। इसी कड़ी में खरतरगच्छ युवा परिषद् बीकानेर शाखा द्वारा प्रभु भक्तों के साथ परमात्मा महावीरस्वामी के अभिनव तीर्थ श्री विक्रमपुर की यात्रा की गई, जहां परमात्मा महावीर की पूजा व विशिष्ट प्रभु-भक्ति की गई। पूजा के लाभार्थी श्री बाबुलालजी घेवरचंदजी मुसर्रफ परिवार बीकानेर रहा। वहीं तीर्थ-यात्रा का लाभ श्री तनसुखराजजी डागा परिवार एवं मोतीचंदजी नरेन्द्रजी खजांची परिवार रहा।

खरतरगच्छ बालक परिषद् द्वारा जन्मकल्याणक के अवसर पर बोरों की सेरी स्थित महावीरस्वामी मंदिर में अंगरचना की गई। व सेवाश्रम में शीतल पेय वितरीत किया गया।

खरतरगच्छ बालिका परिषद् बीकानेर शाखा ने डागा प्रोल स्थित श्री महावीरस्वामी मंदिर में भव्य आंगी रचाई। साथ ही अपना घर आश्रम में ज्युस व जीवनोपयोगी सामग्री का वितरण किया गया।

जन्म कल्याणक के उपलक्ष में प्रश्नोत्तरी का आयोजन भी किया गया, जिसमें प्रथम तीन स्थान क्रमशः दिव्या भूगड़ी, खुशबू नाहटा, मोहित बोथरा ने प्राप्त किया। सभी को सांत्वना पुरस्कार दिए गए।

शिक्षा के लिए सहयोग की पहल

जयपुर। श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ के अध्यक्ष श्री प्रकाशचंदजी लोढा को सम्पूर्ण समाज की ओर से धन्यवाद। एस.जे. शिक्षा समिति के तत्त्वावधान में एस.जे. पब्लिक स्कूल में अध्ययन करने वाले खरतरगच्छ समुदाय के छात्र-छात्राओं की चौथाई फीस संघ द्वारा वहन करने की घोषणा पर अमल होना शुरु हो गया है। जिसका एक हिस्सा एस.जे. शिक्षा समिति, एक हिस्सा खरतरगच्छ संघ वहन करेगा। यानी अब यहां पढने वाले खरतरगच्छीय बच्चों को आधी फीस ही देनी पड़ेगी। आधी फीस संघ और एस.जे. शिक्षण संस्थान वहन कर रहे हैं। इस संदर्भ में शिवजीराम भवन में आवेदन फार्म आना शुरु हो गए हैं। निश्चित ही यह खरतरगच्छ संघ का बहुत सुंदर प्रयास और अच्छा कदम कहा जाएगा। अब समाज के लोगों को चाहिए कि अपने गच्छ के बच्चों को दी जाने वाली फीस के रूप में वे भी खरतरगच्छ संघ में सहयोग राशि जरूर लिखावें जैसे प्रधानमंत्री राहत कोष या मुख्यमंत्री राहत कोष होता है, ऐसे ही खरतरगच्छ छात्र अध्ययन कोष में सहयोग अवश्य करें।

आपका आज का सहयोग कल के खरतरगच्छ का उज्ज्वल भविष्य तय करेगा। पुनः एस.जे. एवं खरतरगच्छ संघ को साधुवाद।

-सुरेन्द्रकुमार जैन

जैन तीर्थ अंतरालिया में खातमुहूर्त

अंतरालिया 25 अप्रेल । पू. गणाधीश पंन्यास श्री विनयकुशलमुनि गणिवर्य जी म की निश्रा में श्री करण पार्श्वनाथ तीर्थ, जो 425 वर्ष प्राचीन है, का जीर्णोद्धार कार्य चल रहा है। इस प्राचीन तीर्थ में यात्रियों की सुविधा को दृष्टिगत रखते हुए धर्मशाला का खातमुहूर्त एवं शिलान्यास दिनांक 25 अप्रैल 19 को संपन्न हुआ।

मुनिवरों का मालवा में विचरण

पूज्य गुरुदेव 'अवन्ति तीर्थोद्धारक' खरतरगच्छाधिपति आचार्य देव श्री जिनमणिप्रभ सूरीश्वरजी महाराज साहब के शिष्य पूज्य मुनिराज श्री मयंकप्रभसागरजी महाराज एवं आर्यश्री मेहुलप्रभसागर जी महाराज ठाणा-2 एवं महत्तरा पदविभूषिता श्री चंपाश्रीजी म. की शिष्या एवं साध्वीवर्या श्री विमलप्रभाश्रीजी म. की चरणाश्रिता साध्वीवर्या हेमरत्नाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 3 ने मालव प्रदेश के विभिन्न गांवों की स्पर्शना करते हुए मोहनखेड़ा, राजगढ़, रतलाम, जावरा, बही पार्श्वनाथ तीर्थ, मन्दसौर आदि शहरों में पावन प्रवास किया।

इसी कडी में दिनांक 24 अप्रेल को नीमच नगर स्थित श्री भीड़भंजन पार्श्वनाथ जैन संघ में पावन प्रवेश हुआ। जिसमें नीमच श्रीसंघ ने उत्साह से भाग लिया। प्रवेश समारोह में आचार्य श्री शांतिचंद्रसूरिजी संप्रदायवर्तिनी पू. साध्वीवर्या हितदर्शिताश्रीजी म. आदि ठाणा 16 का सानिध्य भी संघ को मिला।

नीमच नगर प्रवेश से पूर्व प्रात: 7 बजे जैन भवन परिसर में श्रीसंघ की नवकारसी का आयोजन रखा गया। नवकारसी के पश्चात् जैन भवन से भव्य जुलूस गाजे बाजे के साथ नगर के प्रमुख मार्गों से होता हुआ पुस्तक बाजार स्थित श्री भीड़भंजन पार्श्वनाथ जैन मंदिर उपाश्रय पर पहुंचा। जहाँ पर पूज्य मुनिश्री एवं साध्वीजी म. सा. के प्रवचन हुए। प्रवचन के पूर्व स्वागत गीत श्रीमती अनीता गोपावत, श्रीमती इंदू छाजेड़ व श्रीमती ऋतु गोपावत ने प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन श्री मनीष कोठारी ने किया।

दिनांक 25 अप्रेल को भी प्रवचन हुए। दो दिवसीय प्रवास से अभिभूत श्रावकों ने मुनिवरों से प्रवास बढाने का निवेदन किया। अनुकूलता न होने से भविष्य में पुन: विचरण का भाव रखते हुए शाम को जावद के लिए विहार किया। दिनांक 26 अप्रेल को जावद में श्री शांतिनाथ जैन मंदिर उपाश्रय में गाजे-बाजे से प्रवेश हुआ। जावद के लोगों की भक्ति अनुमोदनीय रही। प्रवचन एवं सभी जिनमंदिरों के दर्शन कर शाम को खोर नगर में प्रवास हुआ।

दिनांक 26 अप्रेल को पूज्य मुनिश्री एवं साध्वीजी महाराज साहब निम्बाहेडा (राजस्थान) पहुंचे। श्री जिनकुशलसूरि दादावाड़ी परिसर में प्रवास हुआ। विहार में 15 कार्यकत्ताओं ने अपनी अनमोल सेवा दी। पूज्यों का विहार उदयपुर-जीरावला की ओर प्रवर्तमान हैं।

-सुनील गोपावत, नीमच

भूल सुधार

ललवाणी/लालाणी के इतिहास में 'नंवागी वृत्तिकार खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री अभयदेवसूरीश्वरजी म. के पट्टधर पूज्य विद्वद्शिरोमणि आचार्य श्री जिनवल्लभसूरीश्वरजी म. का अपने शिष्य मंडल के साथ पदार्पण हुआ।' इस प्रकार पढ़ा जाएं। त्रुटि के लिए खेद है।

जहाज मन्दिर पत्रिका के सम्माननीय संस्था संरक्षक

श्री मुल्तान जैन श्वे. सभा (श्री मुल्तान मन्दिर), आदर्श नगर, जयपुर
श्री अवन्ति पार्श्व. तीर्थ जैन श्वे.मू.पू. मारवाड़ी समाज ट्रस्ट, उज्जैन
श्री जैन मणिधारी जिनचन्द्रसूरि दादावाड़ी ट्रस्ट, इचलकरंजी
श्री जैन श्वे. संघ २(महावीर साधना केन्द्र) जवाहर नगर, जयपुर
श्री जैन श्वे. संस्था (वासुपूज्य आराधना भवन), मालवीय नगर, जयपुर
श्री दिल्ली गुजराती श्वे.मू.पू. जैन संघ गुजरात विहार, दिल्ली
श्री जिनकुशलसूरि जैन खरतरगच्छ दादावाड़ी ट्रस्ट, नईदिल्ली
श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ श्रीसंघ, पचपदरा
श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ सम्पत्ति ट्रस्ट, भीलवाड़ा
श्री देराऊर पार्श्वनाथ तीर्थ एवं देराऊर दादावाड़ी, जयपुर
श्री जैन श्वे. नाकोड़ा पार्श्वनाथ तीर्थ, मेवानगर
श्री हस्तिनापुर जैन श्वेताम्बर तीर्थ समिति, हस्तिनापुर
श्री जैन श्वे. वासुपूज्यजी म. का मंदिर ट्रस्ट, उदयपुर
श्री जैन श्वे. चौमुख दादावाड़ी वैशाली नगर, अजमेर
श्री जैन श्वे. खरतरगच्छ संघ जाटावास, लोहावट
श्री बडौदा जैन श्वे. खरतरगच्छ, संघ, वडोदरा
श्री श्वेताम्बर जैन श्रीमाल सभा, जयपुर
श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ, जयपुर
श्री अजितनाथ जैन नवयुवक मंडल, नंदुरबार
श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ श्री संघ, सांचोर
श्री जैन श्वे. मूर्तिपूजक श्री संघ, उदयपुर
श्री जैन श्वे. खरतरगच्छ संघ, अजमेर
श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ, गाजियाबाद
श्री जैन श्वेताम्बर श्री संघ, गुरला (भीलवाड़ा)
जैन श्री संघ, सेलम्बा, (नर्मदा, गुजरात)
श्री पार्श्वमणि तीर्थ, पेद्दतुम्बलम्, आदोनी
श्री जैन श्वे. संघ जैन मंदिर, तलोदा
श्री जैन श्वे. खरतरगच्छ संघ, केकड़ी
श्री जैन श्वे. खरतरगच्छ संघ, ब्यावर
श्री जैन श्री संघ, धोरीमन्ना
श्री उम्मेदपुरा जैन श्री संघ, सिवाना
श्री जैन श्वेताम्बर श्री संघ, खापर
जैन श्री संघ, वाण्याविहिर
श्री कुशल पत संस्था, खापर
श्री नमिनाथ पत संस्था, खापर
श्री हाला जैन संघ, ब्यावर-फालना
श्री जिन हरि विहार समिति, पालीताणा
श्री हरखचंद नाहटा स्मृति न्यास, नई दिल्ली
श्री जिनदत्तसूरि जैन श्वे. दादावाडी, दोंडाईचा
श्री जैसलमेर लौद्रवपुर जैन श्वे. ट्रस्ट, जैसलमेर
श्री जिन कुशल मंडल (बाड़मेर) इचलकरंजी
श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ, मुम्बई
श्री रायॅल काम्पलेक्स श्वे. मूर्तिपूजक संघ, मुंबई
श्री जैन श्वे. खरतरगच्छ संघ, भायंदर, मुंबई
श्री जैन श्वे. श्रीसंघ, दोड्डबल्लापुर (बैंगलोर)
श्री संभवनाथ श्वेताम्बर जैन मंदिर ट्रस्ट, वडपलनी, चैन्नई
श्री वासुपूज्यस्वामी जैन श्वे. मंदिर ट्रस्ट, अरूम्बकम, चैन्नई
श्री कुन्थुनाथ जैन श्वे. मूर्तिपूजक संघ (रजि.) सिंधनूर
श्री धर्मनाथ जैन मंदिर ट्रस्ट-जिनदत्तसूरि जैन सेवा मंडल, चेन्नई
श्री जिनकुशलसूरि जैन दादावाडी बाड़मेर ट्रस्ट- मालेगॉव
श्री जैन श्वे. आदीश्वर भगवान मंदिर ट्रस्ट, सोलापुर
श्री जैन श्वे. मू.पू. श्री संघ, बिजयनगर
श्री जैन श्वे. खरतरगच्छ संघ, जसोल
श्री शीतलनाथ भगवान मन्दिर एवं दादा जिनकुशलसूरि समिति, पादरू
श्री आदिनाथ जिनमंदिर एवं जिनकुशलसूरि दादावाडी ट्रस्ट, हुबली
श्री शान्तिनाथ जिनालय ट्रस्ट, चौहटन
- जैन श्वेताम्बर श्री संघ, शेरगढ़
- श्री जैन श्वे. खरतरगच्छ संघ, इन्दौर
- श्री जैन मरुधर संघ, हुबली (कर्णाटक)
- श्री जैन श्वेताम्बर मंदिर ट्रस्ट, सारंगखेडा
- श्री जिन कुशल सूरि बाडमेर जैन श्री संघ, सूरत
- श्री जिनकुशलसूरि जैन दादावाड़ी ट्रस्ट, अग्रहार, मैसूर
- श्री जैन श्वेताम्बर मू.पू. श्री संघ, ऊटी (नीलगिरी तमिलनाडू)
- दादावाड़ी श्री जिनकुशलसूरि जिनचन्द्रसूरि ट्रस्ट, अयनावरम् चैन्नई

जीरावला तीर्थ में

जिनालय एवं दादावाडी का शिलान्यास 26 मई को

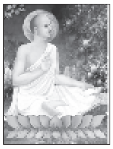

जीरावल 26 मई। विश्व विख्यात एवं जगजयवंत श्री जीरावला तीर्थ की पावन भूमि पर मुख्य मार्ग पर श्री पार्श्वप्रभु जिनालय एवं श्री जिनकुशलसूरिजी दादावाडी निर्माण हेतु भूमिपूजन, खातमुहूर्त और शिलान्यास विधान दिनांक 26 मई 2019 को आयोजित किया गया है।

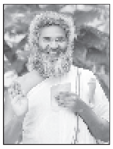

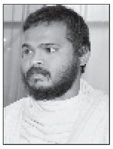

इसके साथ ही गुरु गौतमस्वामी मंदिर, नाकोडा भैरव मंदिर, श्री अंबिकादेवी मंदिर आदि का भूमिपूजन, खातमुहूर्त और शिलान्यास भी संपन्न होगा। यह समारोह पूज्य अवंति तीर्थोद्धारक खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की पावन प्रेरणा एवं मार्गदर्शन में उनके शिष्य पूज्य मुनिराज श्री मयंकप्रभसागरजी म. मेहुलप्रभसागरजी म. की निश्रा में संपन्न होगा। इस अवसर पर पूज्या महत्तरावर्या श्री चंपाश्रीजी म. की शिष्या साध्वीवर्या विमलप्रभाश्रीजी म. की चरणाश्रिता पूज्या साध्वी हेमरत्नाश्रीजी म., सा. जयरत्नाश्रीजी म., सा. नूतनप्रियाश्रीजी म. ठाणा-3 का सानिध्य प्राप्त होगा। सकल श्री संघ एवं प्रभु भक्तों से इस मंगल अवसर पर पधारने का हार्दिक अनुरोध है।

शाजापुर में ध्वजारोहण

शाजापुर 22 अप्रेल। ओसवाल सेरी स्थित प्राचीन एवं चमत्कारी दादावाड़ी के जीर्णोद्धार की पांचवीं वर्षगांठ के मौके पर तीन दिवसीय ध्वजारोहण कार्यक्रम आनंदपूर्वक संपन्न हुआ।

पूज्या साध्वीवर्या कल्पलताश्रीजी म., साध्वी शिलांजनाश्रीजी म., साध्वी अर्हंनिधिश्रीजी म. आदि ठाणा के सान्निध्य एवं शासनरत्न मनोजकुमार बाबुमलजी हरण की उपस्थिति में आयोजित किए जा रहे इस तीन दिवसीय महोत्सव में दिनांक 20 अप्रेल को अष्टापद महातीर्थ की भावयात्रा की गई।

दूसरे दिन श्री शांतिजिन महापूजन, तीसरे व मुख्य दिवस प्रातः जैन उपाश्रय से ध्वजारोहण का वरघोड़ा निकाला गया, जो प्रमुख मार्गो से होता हुआ दादावाड़ी पहुंचा। पश्चात् दादा गुरुदेव की महापूजा प्रारंभ होकर दोपहर 12.30 बजे विजयमुहूर्त में दादावाड़ी के शिखर पर ध्वजा आरोहित की गयी। समारोह में मध्यप्रदेश के पूर्व मंत्री पारसजी जैन एवं शुजालपुर विधायक इंदरसिंह परमार सहित अनेक अतिथि गण भी शामिल हुए।

मुंबईकरों ने पुष्प-वर्षा कर किया स्वागत

मुंबई 17 अप्रेल। महानगर के इतिहास में पहली बार 111 संघों द्वारा भगवान महावीर जन्म कल्याणक के मौके पर आयोजित सामूहिक रथ यात्रा में जन सैलाब उमड़ पड़ा।

कुंथुनाथ जैन संघ से निकली इस रथ यात्रा में हजारों लोग शरीक हुए। जैसे-जैसे रथ यात्रा पायधुनी की ओर से बढ़ रही थी। श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ती जा रही थी और जगह-जगह शोभायात्रा का स्वागत किया गया। रथयात्रा में विभिन्न झांकियों के साथ बच्चों द्वारा प्रस्तुत की जा रही झांकी विशेष रूप से आकर्षण का केंद्र बनी हुई थी।

हर चौराहे और नाके पर हजारों की संख्या में लोग प्रभु के दर्शन करने के लिए खड़े थे। रथयात्रा में कई राजकीय एवं प्रशासनिक व्यक्तित्वों ने अपनी उपस्थिति देते हुए प्रभु के दर्शन किए। वरघोड़े के सूत्रधार मुकेश वर्धन थे। उनके नेतृत्व में भव्य रथयात्रा पायधुनी पहुंची और वहां मुंबादेवी ग्राउंड में इसका समापन समारोह हुआ।

श्री कुंथुनाथ जैन संघ, कोठारी हाइट्स, मुंबई सेंट्रल में सुबह 7.50 बजे प्रभु महावीर की 108 दीपक की आरती से कार्यक्रम का आगाज हुआ फिर 8 बजे से भव्य रथयात्रा का शुभारंभ हुआ और नवजीवन सोसायटी, प्रतीक्षा सर्कल, बालाराम स्ट्रीट, राजा राममोहनरॉय रोड, वी.पी.रोड, विल्सन स्ट्रीट, नानुभाई देसाई रोड, सीपी टैंक सर्कल, भूलेश्वर और पायधुनी होते हुए विभिन्न मार्गों से गुजरते हुए यात्रा अपने गंतव्य तक पहुँची। इस रथयात्रा में आचार्यश्री अभयशेखरसूरिजी म., श्री योगतिलकसूरिजी म., श्री महासेनसूरिजी म., युगप्रभसूरिजी म., गुणचंद्रसागरसूरिजी म., मुनि विवेकविजयजी म., मुनि भक्तिवल्लभ वि. म., मुनि निरागपूर्ण वि. म. सहित दो सौ गुरु भगवंतों की पावन निश्रा में जिस तरह से जनमेदिनी उमड़ी। उसे देखने मुम्बईकर सड़कों के किनारे खड़े रहे।

जिनहरि विहार धर्मशाला में भूमिपूजन संपन्न

पालीताना 22 अप्रेल। विश्व विख्यात पालीताना तीर्थ की पावन भूमि पर स्थित श्री जिनहरि विहार धर्मशाला में नई धर्मशाला हेतु दिनांक 22 अप्रेल 2019 प्रातः 7 बजे भूमिपूजन-खातमुहूर्त्त की विधि संपन्न की गई।

प्रस्तावित नूतन धर्मशाला में भोजनशाला हॉल, प्रवचन हॉल, लायब्रेरी, प्याऊ, कार्यालय आदि निर्मित होंगे।

प्रातः शुभ मुहूर्त में भूमिपूजन एवं खातमुहूर्त लाभार्थी परिवारों द्वारा किया गया। दोपहर 12.39 बजे नूतन धर्मशाला भवन की शिलान्यास विधि की गई। जिसमें पुण्यशालियों ने शिलाओं को विधिवत पूजन कर स्थापित की।

इस अवसर पर पूज्य खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. के शिष्य मुनिवर्य श्री मौनप्रभसागरजी म., मुनि श्री मोक्षप्रभसागरजी म., मुनि श्री मननप्रभसागरजी म. एवं पूज्य उपाध्याय श्री मनोज्ञसागरजी म. केिशष्यप ूज्यम ुनिश्र ीक ल्पज्ञसागरजीम .स हितस ाध्वीवर्याि वशालप्रभाश्रीजीम .,ग णिनीवर्यास ुलोचनाश्रीजीम ., साध्वी दक्षगुणाश्रीजी म., साध्वी प्रियदर्शनाश्रीजी म., साध्वी मृगावतीश्रीजी म., साध्वी मयणरेखाश्रीजी म. आदि विशाल संख्या में साधु-साध्वीजी उपस्थित थे। इस महोत्सव मे शामिल हेतु अहमदाबाद से 2 बस, बेंगलोर, बाड़मेर, सूरत, वडोदरा, चैन्नई आदि अनेक स्थानों से भक्तों का आवागमन हुआ। समारोह में सर्वप्रथम परमात्मा आदिनाथ प्रभु की पूजा आरती की गई। गुरु भगवंतों के प्रवचन हुए। समारोह में बाबूलालजी लूणिया, पुखराजजी मेहता, दीपचंदजी बाफना, माणकचंदजी ललवाणी, भेरूभाई लूणिया, लक्ष्मीकांत भाई शाह, संघवी अशोकजी भंसाली, रतनलालजी बोहरा, बाबुलालजी बोथरा, रतनलालजी बोथरा, तनसुखराजजी गुलेच्छा आदि अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

पू. महत्तरा श्री विनीताश्रीजी म. का चारित्रोत्सव मनाया

93 वर्षीय महत्तरा पदविभूषित श्री विनीताश्रीजी म.सा. के संयम जीवन के 80 वर्ष पूर्णाहुति के उपलक्ष में इन्दौर के रामबाग स्थित श्री जिनकुशलसूरि दादावाडी परिसर में चारित्र अनुमोदना महोत्सव मनाया गया। आपका जन्म सन् 1926 में पादरा (गुजरात) में हुआ था। छठी कक्षा तक अध्ययन किया। 13 वर्ष की उम्र में ही उन्होंने दीक्षा लेने का निर्णय लिया। अनादरा (राजस्थान) में दीक्षा ली। उन्हें आचार्य श्री विजयशांतिसूरीश्वरजी म. ने दीक्षा अर्पण की थी। वे प्रवर्तिनी विचक्षणश्रीजी म.सा. की शिष्या बनीं। साध्वी जीवन में दो लाख किमी पैदल चल चुके हैं। बीते 10 वर्षो से वे रामबाग दादावाड़ी में ही स्थिरवास कर रहे हैं।

महावीर बाग में हुआ दीक्षा महोत्सव

श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ श्री कल्याण संघ इंदौर समिति द्वारा सरलमना महत्तरापद विभूषिता श्री विनीताश्रीजी म.सा. का 80वां दीक्षा महोत्सव 1 मई को सुबह 9.00 बजे से महावीर बाग में मनाया गया। परमात्म भक्ति एवं संयम संवेदना का संचालन दीपकभाई शाह बारडोली वालों द्वारा किया गया।

साधु साध्वी समाचार

पूज्य ब्रह्मसर तीर्थोद्धारक उपाध्याय **श्री मनोज्ञसागरजी म.** ठाणा2 पालीताना से विहार कर अहमदाबाद, सांचोर होते हुए धोरीमन्ना पधारे हैं। यहाँ कुछ दिनों की स्थिरता के पश्चात् ब्रह्मसर की ओर विहार होगा।

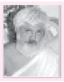

पूज्य मुनि **श्री मुक्तिप्रभसागरजी** म. **मनीषप्रभसागरजी** म. आदि ठाणा उज्जैन से विहार कर पालीताना पधार गये हैं। वहाँ जिनहरि विहार में बिराजमान है। उनकी निश्रा में अक्षय तृतीया के पारणे होंगे। तथा ता. 30 मई को कुमारी मनीषा छाजेड की भागवती दीक्षा संपन्न होगी। तत्पश्चात् वहाँ से सांचोर की ओर विहार होगा।

पूज्य मुनि **श्री मयंकप्रभसागरजी म. मेहुलप्रभसागरजी म.** उज्जैन से विहार कर भोपावर आदि तीर्थों की यात्रा कर जावरा, मन्दसौर, नीमच, निम्बाहेड़ा, मंगलवाड़ होते हुए उदयपुर पधार गये हैं। यहाँ से वे जीरावला तीर्थ की ओर विहार करेंगे। जहाँ उनकी पावन निश्रा में ता. 26 मई 2019 को जिनमंदिर दादावाड़ी का भूमिपूजन, खनन मुहूर्त्त एवं शिलान्यास समारोह संपन्न होगा।

पूज्य मुनि **श्री मनितप्रभसागरजी म.** ठाणा 4 बाड़मेर से विहार कर चौहटन, धोरीमन्ना, सांचोर, शंखेश्वर, अहमदाबाद, बडौदा, राजपीपला होते हुए ता. 1 मई को सेलंबा पहुँचे हैं। वहाँ से विहार कर पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्यश्री के सानिध्य में ता. 6 मई 2019 को नंदुरबार पधारेंगे।

पूजनीया महत्तरा पद विभूषिता **श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म.** आदि ठाणा 4 अवंति पार्श्वनाथ तीर्थ, उज्जैन में बिराजमान हैं। स्वास्थ्य की प्रतिकूलता है। अनुभवी डॉक्टरों की देखरेख में चिकित्सा प्रारंभ है। गुरुदेव की कृपा से शीघ्र ही पूर्ण स्वस्थता प्राप्त करे, ऐसी गुरुदेव से प्रार्थना है।

पूजनीया प्रवर्तिनी **श्री शशिप्रभाश्रीजी म.** आदि ठाणा जयपुर में बिराजमान है। उनके घुटनों की सफल शल्य चिकित्सा की गई। अभी वे स्वास्थ्य लाभ प्राप्त कर रहे हैं।

पूजनीया गणिनी पद विभूषिता **श्री सुलोचनाश्रीजी म. सुलक्षणाश्रीजी म.** आदि ठाणा उज्जैन से विहार कर पालीताना पधार गये हैं। उनकी शिष्या पूजनीया साध्वी श्री प्रियस्नेहांजनाश्रीजी म. के वर्षीतप का पारणा अक्षय तृतीया पर संपन्न होगा। तत्पश्चात् गिरनार की ओर चातुर्मास के लिये विहार होगा।

पूजनीया गणिनी पद विभूषिता **श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म. पूर्णप्रभाश्रीजी म.** आदि ठाणा उज्जैन से विहार कर इन्दौर, सेंधवा, खेतिया, शहादा, निमगुल होते हुए नंदुरबार पधार गये हैं। दीक्षा महोत्सव के पश्चात् राजस्थान फलोदी की ओर विहार करेंगे।

पूजनीया माताजी म. श्री **रतनमालाश्रीजी म., पू. बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.** आदि ठाणा 8 उज्जैन से विहार कर इन्दौर, बड़वाह, सेंधवा, शिरपुर, धूलिया होते हुए ता. 1 मई को मालेगांव पधार गये हैं। वहाँ से पूना की ओर विहार करेंगे।

पूजनीया साध्वी **श्री सम्यग्दर्शनाश्रीजी म.** आदि ठाणा 4 निमगुल बिराज रहे हैं। उनकी प्रेरणा से बने श्री पार्श्व कुशल शांति धाम की ता. 3 मई को प्रतिष्ठा की संपन्नता के पश्चात् नंदुरबार पधारेंगे। ता. 10 मई को दीक्षा की संपन्नता के पश्चात् छत्तीसगढ़ राजनांदगाँव की ओर विहार करेंगे।

पूजनीया साध्वी **श्री विमलप्रभाश्रीजी म.** आदि ठाणा खेतिया बिराज रहे हैं। खेतिया में उनकी निश्रा में शिविर आदि कार्यक्रम हो रहे हैं। वहाँ से विहार कर नंदुरबार दीक्षा महोत्सव में पधारेंगे।

पूजनीया साध्वी **श्री कल्पलताश्रीजी म.** आदि ठाणा शाजापुर से विहार कर महिदपुर पधारे है। वहाँ से नागेश्वर, मन्दसौर होते हुए उदयपुर केशरियाजी तीर्थ पधारेंगे।

पूजनीया साध्वी **डॉ. श्री शासनप्रभाश्रीजी म.** ठाणा 2 उज्जैन से विहार कर पालीताना पधार गये हैं। श्री जिनहरि विहार में उनकी स्थिरता रहेगी।

पूजनीया साध्वी **श्री हेमरत्नाश्रीजी म.** ठाणा 3 विहार कर उदयपुर पधारे हैं। वहाँ से विहार कर जीरावला दादावाडी के शिलान्यास मुहूर्त्त में सानिध्यता प्रदान करेंगे।

पूजनीया साध्वी **श्री सौम्यगुणाश्रीजी म.** ठाणा 3 जयपुर से विहार कर कल्याणपुर पहुँचे हैं। वहाँ से बाड़मेर पधारेंगे।

पूजनीया साध्वी **श्री संघमित्राश्रीजी म.** ठाणा 3 इन्दौर में बिराजमान है। उनकी निश्रा में ता. 29 से 5 मई तक बालक-बालिकाओं का शिविर चल रहा है। उसके पश्चात् जयपुर की ओर विहार करेंगे।

पूजनीया साध्वी **श्री आज्ञांजनाश्रीजी म.** ठाणा 2 निमगुल पधारे हैं। वहां से नंदुरबार दीक्षा में पधारेंगे।

दो पू. साध्वीजी भगवंतों का दुर्घटना में देवलोक

मदुराई 2 मई। पूजनीया प्रवर्तिनी श्री निपुणाश्रीजी म. की शिष्या पू. साध्वी श्री मंजुलाश्रीजी म. की निश्रावर्ती पू. साध्वी श्री प्रियदर्शिताश्रीजी म., पू. सुदर्शिताश्रीजी म. का मदुराई (तमिलनाडु) के पास ता. 2 मई 2019 को प्रातःकाल विहार में दुर्घटना में स्वर्गवास हो गया। जिनशासन, गच्छ व समुदाय में बहुत बडी क्षति हुई।

पूज्य साध्वी श्री मंजुलाश्रीजी म. आदि ठाणा 5 कोडैकनाल की पुनर्प्रतिष्ठा की संपन्नता के पश्चात् मदुराई की ओर विहार कर रहे थे। रात्रि विश्राम जहाँ किया था, वहाँ अत्यधिक उष्णता के कारण बाहर आकर सडक के किनारे एक वृक्ष के नीचे बैठकर स्वाध्याय कर रहे थे। अंधकार दूर होकर प्रकाश हो जाय, तब विहार करने के उद्देश्य से वहाँ वे सभी सामान वाली गाडी के पास बैठ कर परस्पर गाथाओं का पाठ कर रहे थे कि तभी एक लक्ज़री बस ने सामान वाली गाडी को जोरदार टक्कर मारी, जिससे वह गाडी स्वाध्याय कर रहे साध्वीजी भगवंतों पर उल्टी होकर गिर गई। परिणाम स्वरूप दो साध्वीजी महाराज का दर्दनाक स्वर्गवास हो गया।

पू. साध्वी श्री मंजुलाश्रीजी म. को भी काफी चोट आई तथा पू. साध्वी श्री सम्यक्निधि श्रीजी म. के कंधेपर गहरी चोट आई। उनकी शल्य चिकित्सा होगी।

मदुराई श्री संघ ने पूरी स्थिति को सम्हालते हुए तत्परता से सारे कार्य किये। उनकी पालखी यात्रा में चेन्नई, बैंगलोर, तिरपातूर, सेलम, त्रीची आदि कई संघों की उपस्थिति रही।

पू. साध्वी श्री प्रियदर्शिताश्रीजी म. का जन्म लूणिया परिवार में ता. 14 मार्च 1964 को हुआ था। ता. 24 जनवरी 1994 को 30 वर्ष की उम्र में उन्होंने महासमुन्द में दीक्षा अंगीकार की थी।

पू. साध्वी श्री सुदर्शिताश्रीजी म. का जन्म 14 अगस्त 1971 को सालेकसा गांव में बुरड़ परिवार में हुआ था। इनकी दीक्षा दल्लीराजहरा में 26 वर्ष की उम्र में ता. 13 दिसंबर 1997 को हुई थी।

साध्वी द्वय के स्वर्गवास से छत्तीसगढ़ सहित पूरे भारत में शोक की लहर छा गई। पूज्य गच्छाधिपतिश्री सहित साधु-साध्वीयों ने अपनी संवेदनाऐं प्रेषित की। जहाज मंदिर परिवार हृदय से श्रद्धांजलि समर्पित करता है।

जटाशंकर

आचार्य जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.

जटाशंकर स्कूल में पढ़ाई कर रहा था। अंग्रेजी पढ़ाने के लिये नये अध्यापक आये थे। उन्होंने तय किया कि मैं बच्चों को नई शैली से अंग्रेजी सिखाऊँगा।

सबसे पहले मैं शरीर के अंगों के अंग्रेजी शब्द याद कराऊँगा।

पहले ही दिन उन्होंने कहा- बच्चों! याद करो! माय हैड अर्थात् मेरा सिर! और यह शब्द कल याद करके आना। कल मैं पूछूंगा। तुम्हें याद हो गया तो आगे बढ़ूंगा।

जटाशंकर घर जाकर जोर-जोर से इस शब्द को रटने लगा-

माय हेड अर्थात् शिक्षक का सिर! माय हेड अर्थात् शिक्षक का सिर!

उसके पिताजी घटाशंकर ने जब यह सुना तो जोर से बोले- गलत! किसने ऐसा सिखाया!

उन्होंने सुधार कर बताते हुए कहा- माय हेड अर्थात् मेरा सिर! ऐसा याद करो। पिताजी अपने अन्य कार्य में व्यस्त हो गये।

इधध्र जटाशंकर याद करने लगा- माय हेड अर्थात् पिताजी का सिर!

दूसरे दिन संयोग से स्कूल का निरीक्षण करने के लिये निरीक्षक महोदय आये। उन्होंने जटाशंकर को खडा कर पूछा- माय हेड का क्या अर्थ!

जटाशंकर ने कहा- स्कूल में माय हेड का अर्थ है अध्यापक का सिर और घर में इसका अर्थ है- पिताजी का सिर!

इंस्पेक्टर ने कहा- बिल्कुल गलत! माय हेड का अर्थ होता है मेरा सिर!

जटाशंकर उलझन में पड़ गया। वह सोचने लगा- कितने सिर याद रखना! अध्यापक का, पिताजी का या फिर इस इंस्पेक्टर का!

वह परेशान होकर प्रिंसीपल के पास गया। अपनी समस्या बताई।

प्रिंसीपल ने कहा- तुझे कुछ याद नहीं रखना। बस इतना ही याद रखना कि माय हेड अर्थात् मेरा सिर!

जटाशंकर प्रसन्न होता हुआ वापस लौटा। उसने पाठ याद किया। माय हेड अर्थात् प्रिंसीपल का सिर!

तीसरे दिन अध्यापक ने क्लास में पूछा- दो दिन पहले मैंने माय हेड का अर्थ बताया था। याद किया कि नहीं! जटाशंकर को खड़ा कर पूछा।

उसने जवाब दिया- माय हेड अर्थात् प्रिंसीपल का सिर!

शिक्षक ने अपना सिर पीट लिया।

शब्द का सही अर्थ समझ में आना जरूरी है। सारी समस्या गलत अर्थ करने की है। धर्म के क्षेत्र में अधिकतर विवाद गलत अर्थ के आग्रह के कारण है।

ग्यारहवीं पुण्यतिथि पर हार्दिक श्रद्धा सुमन

21.9.1946
जन्म :

9.5.2008
स्वर्गवास :

श्री भंवरलालजी संकलेचा

सुपुत्र श्री धरमचन्दजी संकलेचा (रासोणी) मरूधर में पादरू

पिता से ही सुख-संपदा, माँ से है संस्कार
जिस घर में न ये रहें, वो घर है बेकार।

वाद-विवाद तू छोड़ के, जो नतमस्तक होय,
माँ बाप के आशीर्वाद से, सब काम सफल फिर होय।

परवरिश का ही खेल है, जो हुए सौभाग्य से मेल,
माँ-बाप न होते जो जीवन में, जीवन बन जाता जेल।

प्रेम, प्रेम हर कोई करे, अर्थ न जाने कोई,
जो मात-पिता के शरण रहे, वही प्रेममय होय।

सेवा कर पुण्य कमाइए, माँ-बाप को खुशी फिर होय,
राह खुले जीवन की सदा, संकट रहे न कोय।

आपकी मधुर स्मृति में संकलेचा परिवार

श्रद्धावनत :

धर्मपत्नी मोहिनी देवी

पुत्र-पुत्रवधु : ललितकुमार-ललितादेवी,
राजकुमार-संगीतादेवी, कैलाशकुमार, गौतमचन्द-शिल्पादेवी
पौत्र-पौत्रवधु : मनीषकुमार-सौ. सोनू देवी
पौत्री-जंवाई : निकिताबाई-नवीनकुमारजी बाफना
पौत्र-पौत्री : मिशाल, रूचिका, काजोल, ईशीता
परदौहिता : प्रीत बाफना

फर्म :

नवनिधि इन्टरप्राईजेज
384, मिन्ट स्ट्रीट, ऑफिस नं. 29, दूसरा माला,
चैन्नई - 600079 फोन : 044-25291795

रूपम् कलेक्शन्स
15-8-485, फिलखाना, ओमश्री सांई कॉम्पलेक्स,
हैदराबाद फोन : 040-24612258

RNI : RAJHIN/2004/12270
Postal Registration no. RJ/SRO/9625/2018-2020 Date of Posting 7th

With Best Compliments from :

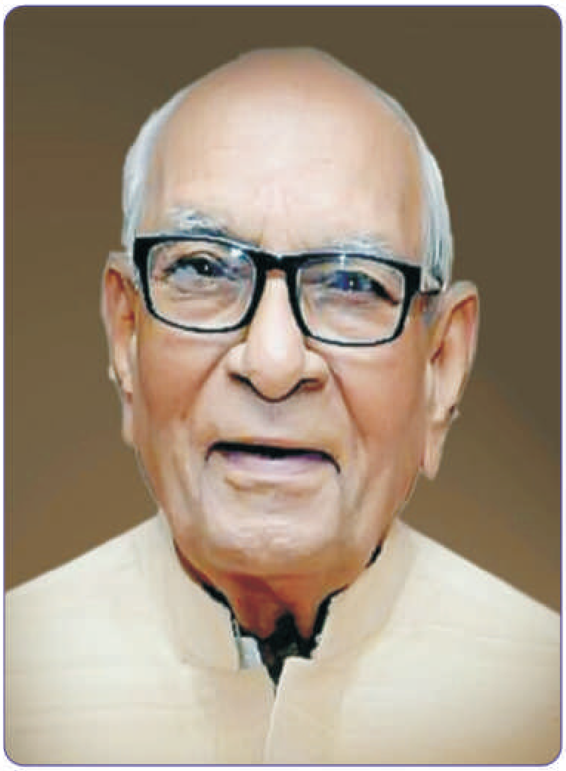

झाबक ट्रेक्टर्स
संकेत झाबक
मो. 93023-14042

झाबक इम्पलीमेंटस
संजोग झाबक
मो. 95757-93000

अलाईड ट्रेडर्स
संदीप झाबक
मो. 82250-50888

ओटोमोबाईल एवं ट्रैक्टर पार्ट्स के होलसेल एवं रिटेल विक्रेता

झाबक बाड़ा, कमासी पारा, तात्यापारा चौक के पास
रायपुर (छ.ग.) 492001

विनीत

मोतीलाल, गौतमचन्द, सम्पत लाल, कमलेश कुमार
संदीप, संजोग, संकेत एवं समस्त झाबक परिवार

श्री जिनकान्तिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट,
जहाज मन्दिर, माण्डवला - 343042, जिला - जालोर (राजस्थान)
फोन : 02973-256107 / 256192 फैक्स : 02973-256040, 09649640451
e-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in
www. jahajmandir.com

श्री जिनकांतिसागर सूरि स्मारक ट्रस्ट, माण्डवला के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक डॉ. यू. सी. जैन द्वारा महालक्ष्मी कम्प्यूटर सर्विस पुरा मोहल्ला, खिरणी रोड, जालोर से मुद्रित एवं जहाज मन्दिर, मांडवला, जि. जालोर (राज.) से प्रकाशित।
सम्पादक - डॉ. यू. सी. जैन
www.jahajmandir.org
शब्दांकन : धर्मेन्द्र बोहरा, जोधपुर-98290 22408